ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक–
वेद, यज्ञ–योग–साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

नवम्बर 2024

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

पूज्यपाद स्व. स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी'

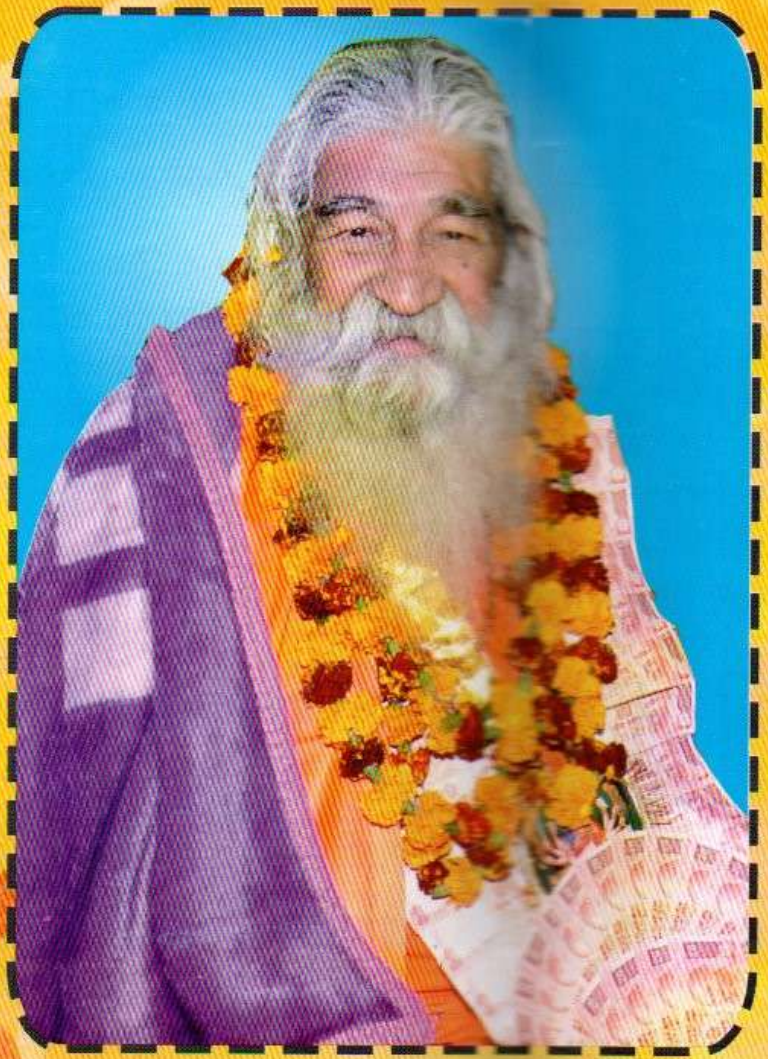

के 89वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

बृहद् यज्ञ एवं
भजन संध्या
सुर और संगीत
का भव्य आयोजन

बुधवार
20 नवम्बर 2024

(विवरण कवर पृष्ठ 3 पर)

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आत्मशुद्धि-पथ के संरक्षक सदस्य बने

श्री संत लाल जी मलिक

सेवानिवृत सरकारी अध्यापक, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, हरियाणा

आत्मशुद्धि-पथ के आजीवन सदस्य बने

1090

श्री राजपाल जी दहिया

एच.एल. सिटी, बहादुरगढ़ हरियाणा

1091

श्री विजय पाल जी

सुपुत्र श्री यादराम जी

सब इंस्पेक्टर, नजफगढ़ रोड, बहादुरगढ़, हरियाणा

1092

श्री रामेश्वर दास जी

एच.एल. सिटी, बहादुरगढ़ हरियाणा

1093

श्री सुरेन्द्र आर्य जी

सुपुत्र श्री यशपाल जी आर्य

अलवर, राजस्थान

1094

श्री राजीव जी आर्य

सुपुत्र श्री यशपाल जी आर्य

जयपुर, राजस्थान

1095

श्री दिव्यांशु दलाल जी

सुपुत्र श्री राजेश कुमार जी

बराही रोड़, नेहरू पार्क, बहादुरगढ़, हरियाणा

1096

सोनू सुपुत्र श्रीमती सन्तोष जी

बराही रोड़, नेहरू पार्क, बहादुरगढ़, हरियाणा

आगामी सदस्य

प्रिय बन्धुओ! मास नवम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी दिसम्बर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा भेजें अथवा सम्पर्क करके खाता नम्बर लेकर सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

कार्तिक-मार्गशीर्ष सम्वत् 2081 नवम्बर 2024

सृष्टि सं. 1960853125 दयानन्दाब्द 200

वर्ष-23) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी
(वर्ष 54 अंक 11)

सम्पादक: आचार्य विक्रम देव
(मो. 9896578062, 7988671343)

❖

प्रधान सम्पादक:
श्री राजवीर छिक्कारा (मो. 9811778655)

❖

सह सम्पादक: डॉ. रवि शास्त्री

❖

परामर्श दाता: सत्यानन्द आर्य,
कन्हैयालाल आर्य, सत्यपाल वत्सार्य

❖

व्यवस्थापक:
आचार्य अमृत आर्य

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507
चलभाष: 9416054195
E-mail : atamsudhi@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
ऋद्ध की छत्रछाया में	5
महर्षि बलिदान दिवस पर विशेष	6
आग्नेय पर्व (मन्त्र 1 से 114 तक)	8
ईश्वर जीव और प्रकृति यही तीनों सृष्टि के मूल...	10
सद्गृहस्थ परस्पर सहयोग करें और दीर्घायु हों।	13
हम दानव नहीं, मानव बने	15
नशे नाश की निशानी: शराब तथा धूम्रपान	17
स्वास्थ्य रक्षा में अमरूद	19
यही सीख सिखलाई/ हंसो हंसाओ	20
आधुनिक संचार माध्यम-कुसंस्कार के स्त्रोत	21
क्या दिक्कत है?	22
भारतीय संस्कृति के विनाश का पहला और बड़ा...	24
महर्षि दयानन्द और उनका सत्यार्थप्रकाश	28
त्याग मय जीवन जीना	31
दीपावली-महर्षि दयानन्द और आर्य समाजी	32
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

84वां जन्मदिवस परिवार वालों ने धूमधाम से मनाया

भाई हरजीत राठी सांखौल व परिवार के सदस्यों द्वारा अपने पिताजी **श्री जगबीर राठी जी** का 84वा जन्मदिवस बड़े ही धूम धाम से मनाया। उनके 84वें जन्मदिवस पर आत्मशुद्धि आश्रम में वैदिक परम्परा के अनुरूप हवन यज्ञ किया गया। इस अवसर पर उन्होंने एक पौधा लगाया और लोगों को भी प्रेरित किया कि वह भी पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए हर एक पौधा लगाए। इस अवसर पर मौजूद सभी आर्यों द्वारा उनके दीर्घ आयु की कामना की। परिवार की तरफ से सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई।

डी.ए.वी. स्कूल में बड़ी धूमधाम से मनाया आर्य समाज सैक्टर- 6 का 21वां वार्षिकोत्सव

सैक्टर-6 आर्य समाज का 21वां वार्षिकोत्सव रविवार को डी.ए.वी. स्कूल के प्रांगण में हर्षोल्लास से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता हरियाणा के आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री उमेद सिंह ने की। जबकि मुख्य अतिथि के तौर पर नगर परिषद् की चेयरपर्सन सरोज राठी पहुंची। मुख्य वक्ता पंडित जगदेव सिंह विद्यालंकार रहे। विशिष्ट वक्ताओं में स्वामी रामानन्द जी, प्राचार्या डॉ. राजन मान तथा भजनोपदेशक के रूप में वैदिक विद्वान सतपाल मधुर, आचार्य भगवान दास और राधेश्याम शर्मा उपस्थित रहे। आर्य हरिओम दलाल ने बताया कि समारोह का आरंभ सुबह नौ बजे गुरुकुल की कन्याओं की ओर से यज्ञ के साथ किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं के अलावा डी.ए.वी. तथा कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने अनेक योग व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में पहुंचे सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम के अन्त में श्री मा. ब्रह्मजीत द्वारा सबका धन्यवाद किया गया।

रूद्र की छत्रछाया में

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

उन्मा ममन्द वृषभो मरुत्वान्,
त्वक्षीयसा वयसा नाधमानम्।
घृणीव च्छायामरपा अशीय
आ विवासेयं रुदस्य सुम्नम्॥

ऋग्. २.३३.६

ऋषिः **गृत्समदः**। देवता **रुद्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

(**वृषभः**) कामवर्षी (**अरपा**) प्रशस्त (**मरुत्वान्**) प्राणवाले (रुद्र प्रभु) ने (**त्वक्षीयसा**) तीक्ष्ण, तेजोमय (**वयसा**) जीवन के निमित्त (**नाधमानम्**) याचना करते हुए (**मा**) मुझे (**उत्-ममन्द**) अत्यधिक संतृप्त कर दिया है। (**इव**) जिस प्रकार (**घृणी**) सूर्यताप से संतप्त पुरुष (**छायां**) (वृक्ष आदि की छाया को (प्राप्त करता है) उसी प्रकार (**घृणी**) तापों से संतप्त मैं (**रुद्रस्य**) रुद्र प्रभु की (**छायां**) छत्रछाया को (**अशीय**) प्राप्त करू, (**रुद्रस्य**) रुद्र प्रभु के (दिये हुए) (सुम्नं) सुख का (आ विवासेयं) आदर करूँ।

संसार के नानाविध कष्टों से संतप्त मैं रुद्र प्रभु की शरण में आया हूँ। मैं रुद्र-प्रभु से याचना कर रहा हूँ कि वह मेरे उदासीन व निस्तेज जीवन के स्थान पर मुझे तीक्ष्ण व तेजोमय जीवन प्रदान करें। वे 'वृषभ' हैं, वरदानों की वर्षा करनेवाले हैं। जो कुछ सच्चे हृदय के साथ हम उनसे माँगते हैं, उसे वे प्रदान करते हैं। वे 'मरुत्वान्' हैं, प्रशस्त प्राणों से युक्त हैं, जगत् के पामर पुरुषों के समान निन्दित प्राणोंवाले नहीं हैं। स्वयं प्रशस्त-प्राण होने के कारण वे अन्यों को भी प्रशस्त-प्राण बनाने में रुचि लेते हैं। अतः उन्होंने मेरी प्रार्थना सुनते ही मुझे तीक्ष्ण एवं तेजोमय जीवन प्रदान करके पूर्णतः संतृप्त कर दिया है। अब मैं मृत-तुल्य न होकर जीवित-जागृत और कर्मण्य हो गया हूँ। अब तो मैंने अनुभव कर लिया है कि सब सन्तापों से मुक्ति की रामबाण औषध प्रभु-नाम-स्मरण ही है। जैसे सूर्यताप से संतृप्त मनुष्य वृक्ष आदि की छाया में जाने के लिए आकुल होता है, वैसे ही सांसारिक तापों से सताया हुआ मैं रुद्र प्रभु की छत्रछाया में पहुँच गया हूँ। मैं स्पष्ट अनुभव कर रहा हूँ कि उसकी छाया में पहुँचते ही मुझे विश्राम मिला है, चित्त को शान्ति मिली है। उसकी छाया ने मेरे चित्त-विक्षोभ, व्याकुलता, ग्लानि, उद्वेग, मनस्ताप, दौर्मनस्य आदि सबको हर लिया है। इस छाया को पाकर मैं एक दिव्य सुख का अनुभव कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि यह सुख मेरी स्थायी सम्पत्ति बन जाये। मैं इस दिव्य अनुपम सुख को पाकर स्वयं को धन्य मानता हूँ। यह मेरी अनमोल पूंजी है। मेरी चिरकाल से मन में संजोई हुई साध आज पूर्ण हुई है। रुद्र प्रभु के इस दिव्य सुख पर मैं सहस्रों सांसारिक सुखों को वारता हूँ। हे प्रभु! मैं तुम्हारे दिये हुए सुख पर मुग्ध हूँ, भाव-विभोर हूँ, इसे निधि बनाकर अपने पास रखूंगा, इसकी पूजा करता रहूँगा।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507,
चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

महर्षि बलिदान दिवस पर विशेष

गतांक से आगे-

महर्षि को विष दिया गया था और वो भी योजनाबद्ध ढंग से इसके कुछ प्रमाण निम्नलिखित है:-

1. जब महाराजा जोधपुर श्री जसवन्त सिंह को ज्ञात हुआ कि महर्षि को विष हुआ है तो उन्होंने विष देने वाले जगन्नाथ उर्फ कल्वा को पकड़ने के आदेश दिये। इसके पिछे दो भाव थे- एक तो यह कि दोषी को दंड दिया जाएं अगर कोई किसी के राज्य में अपराध करता है तो उसे दंड देकर कलंक से बचा जा सकता है। दुसरा भाव यह था अगर कल्वा पकड़ लिया जाता और उसे मृत्यु दंड दे दिया जाता तो फिर किस बात का कलंक। लेकिन अपराधी नहीं पकड़ा गया अब झूठ बोलने, प्रलोभन पाने व असत्य लिखने से तो कलंक मिटेगा नही।

2. दुसरा जो प्रि. श्रीराम शर्मा व अन्य भ्रम पैदा करने के लिये कहते है कि महर्षि की विष से नहीं बल्कि उनकी मृत्यु रोग और वह भी निमोनिया के कारण हुए ये कितने चालाक व धुर्त व्यक्ति है जो जान बुझ कर निमोनिया रोग बता रहे है, क्योंकि एक दो लक्षण निमोनिया और विष के एक जैसे होते है। इस विषय मे स्पष्ट किया जा सकता है की जब सांयकाल महर्षि ने दूध पिया तुरन्त उनको भान हो गया और उन्होंने कल्वा की तरफ देखा तो कल्वा काँप उठा। धन्य हो दयालु महर्षि आपने इतना ही कहा की यह तूने ठीक नहीं किया और कुछ अशरफियाँ देकर भाग जाने के लिये कहा और कल्वा भाग गया। उसी समय नमक का पानी पीकर वमन किया लेकिन विष इतना घातक था कि चन्द मिनटो में ही समस्त शरीर मे फैल गया। उनको संखिया दिया गया था। राजस्थान मे संखिया को कांच भी कहा जाता है और वह शीशे की तरह चमकता है। हमारी इस बात की पुष्टि स्वयं राव राजा तेज सिंह जी करते है जो उस समय जोधपुर मे ही उपस्थित थे। मर्ज बढ़ता गया ज्यो-2 दवा की। अलीमर्दान जो राजकीय वैद्य था उसने भी उल्टा इलाज किया जब यह देखा कि अब महर्षि बच नही सकते तो महाराजा को शुद्ध हवा-पानी वाली जगह भेजने की सलाह देते है ताकि भेद खुल ना जाए। निमोनिया रोग मे तेज ज्वर और खाँसी होती है। पसलियाँ चलती है। महर्षि तो प्रवचन करके आये थे उनके साथ रह रहे ब्र. रामानन्द और आत्मानन्द को भी कोई बिमारी के विषय मे नही जानकारी। फिर यह रोग वाली बिमारी कहाँ से घड़ ली। इतिहास बताता है की चाहे नन्ही जान हो चाहे नन्ही भगतन और जो भी इस षडङन्त्र में सम्मलित थे वे असाध्य रोगों से तड़फ-तड़फ कर मरे है।

3. मुन्शी देवीप्रसाद जी राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार हुए है। यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ की आप आर्य समाजी नही थे लेकिन आपने महर्षि के बलिदान वं राजस्थान पर उनके प्रभाव के विषय में खोज की। आपका भी सुनिश्चित मत यही था की नन्ही भंगतन ने षडयन्त्र करके विष को दूध मे मिला कर कल्वा जिसका नाम जगन्नाथ था के द्वारा दिलवाया।

4. 1929 में चांद पत्रिका प्रयाग के 'मारवाड़ का भीषण पाप' शीर्षक मे एक लेख छपा जिसमे लिखा है कि महर्षि को षडयन्त्र से विषपान करवाया गया। इसी लेख मे लिखते है की कल्वा उर्फ जगन्नाथ की मृत्यु 1907-08 ई. मे हुई। उसने अन्तिम दिनों मे अपना कुकर्म स्वीकार किया। अलीमर्दान से योग्य और दो चिकित्सक राज्य मे थे लेकिन उनसे इलाज नही करवाया गया। क्या यह षड़यन्त्र नही था?

5. जब हम कोई इतिहास लिखते है तो स्वाभाविक है की उसकी प्रारम्भिक अवस्था से ही अनुसंधान करके करते है। आपको 50,000/- रुपया मिला और सीधा आपने लेख दे मारा महर्षि का अन्तिम मास। कर्ज जो चुकाना था? चलने फिरने में भी लगभग असमर्थ प्रि. शर्मा तनिक भी लज्जा नही आई कि मैं क्या लिख रहा हूँ। उस समय के पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ लेते तो निन्दा के पात्र नही बनते। प्रि. श्रीराम शर्मा वर्षों तक महात्मा हंसराज जी के सानिध्य मे रह कर फिर भी यह कलम द्वारा अपराध करते है तो इसे हम

ईश्वर की कर्मफल अवस्था पर ही छोड़ते है।

6. सारा आर्य जगत महात्मा आनन्द स्वामी की विद्वता व उन द्वारा किये गये कार्यों के बारे मे जानता है। जब प्रि. श्रीराम शर्मा का 28-11-1971 को Illustrated Weekly में यह लेख छपा तो इसे पढ़कर उन्होंने लिखा ''या तो कोई स्वार्थ प्रि. शर्मा द्वारा यह कार्य करा रहा है या फिर बुद्धि में कोई विकार आ गया है। ये वर्षों तक पहले दयानन्द कॉलेज में पढ़ते और पढ़ाते रहे क्या तब उनको महर्षि की जीवन गाथा को अनुसंधान करने की प्रेरणा नही हुई, जो अब जाग्रत हो गई है।

7. जादू वह होता है जो सिर पर चढ़ कर बोलता है। गोरखपुर से पोराणिकों का एक मासिक पत्र कल्याण निकलता है। इसके हिन्दु संस्कृति अंक मे स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर भी एक लेख छपा था। उसमें महर्षि के विषय में लिखा है ''उनमें प्रकाण्ड प्रतिभा थी, उज्जवल त्याग था और उनकी वाणी में अद्‌भुत शक्ति थी। जनता पर उनका प्रभाव अधिक पड़ा। स्वामी दयानन्द महान पुरुष थे, उनके जैसे स्पष्टवादी निर्भिक वक्ता बहुत कम मिलते है। वेदों मे प्राचीनतम भारतीय संस्कृति में उनकी अगाध निष्ठा थी। महाराजा जोधुपर के निमन्त्रण पर वे जोधपुर गये। महाराज के आचरण का उन्होंने स्पष्ट प्रतिवाद किया। फलत: महाराज की रखेल ने उन्हें विष दिला दिया''। प्रि. श्रीराम शर्मा ने जो पाप किया है बिना अनुसंधान व स्वाध्याय के कुर्सी और टेबल के माध्यम से ही यह अपराध कर डाला। परमपिता की सर्वव्यापकता व कर्मफल व्यवस्था से भी आपको भय नही लगा। किसी का इतिहास बिगाड़ना, जीवन चरित्र में झूठे आरोप लगाना, किसी प्रलोभन वश गलत लिखना व आरोप लगाना, काल्पनिक मनघड़ंत बाते लिखना सत्य को झूठ बनाने का घोर अपराध होता है। पूर्वजन्म मे इसका क्या फल मिलेगा यह तो मुझे पता नही लेकिन इतना अवश्य लिखता हूँ कि उसे मनुष्य योनी प्राप्त नही होगी। और भी प्रमाण देखिए।

8. महात्मा हंसराज का जन्म 19 अप्रैल 1864 को बजवाड़ा कस्बे में हुआ था। आप पं. गुरुदत्त, लाला लाजपत राय, राजा नरेन्द्रनाथ, प्रो. रुचिराम, रायबहादुर, राय शम्भुनाथ आप सब सहपाठी थे। महर्षि दयानन्द का लाहौर आगमन हुआ था इसी कारण बहुत से बुद्धिमान नवयुवक महर्षि से प्रभावित हुए। महात्मा खुशहालचन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) जी ने महात्मा हंसराज की बहुत ही प्ररेणादायक जीवनी लिखी है जिसमे वे लिखते है 'जबकि यातायात अत्यन्त दुर्गम था, प्रचार के कोई साधन न थे, विरोध अपरिमेय था, स्वामी जी इतने थोड़े समय मे इतना अधिक काम कर सकें। 1883 में उन्हें विष पिलाकर शहीद कर दिया गया'। (पृष्ट 23) इसी पुस्तक में महात्मा जी लिखते है 'तभी अजमेर से हृदय विदारक समाचार आया कि महर्षि दयानन्द को जोधपुर में किसी ने जहर दे दिया और 30 अक्टूबर 1883 मे जब संसार दिवाली के दीपक जला रहा था तब 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहकर अनन्त प्रकाश फैला कर निर्वाण को प्राप्त हो गया'। (पृष्ट 50) यही नही उस समय पंजाब आर्यसमाजियों ने महर्षि के विषय मे जानकारी प्राप्त करने के लिये पण्डित गुरुदत्त व लाला जीवनदास को भेजा था जो उस समय वही उपस्थित थे।

9. श्री रामविलास शारदा व श्री हरविलास शारदा सरीखे प्रबुद्ध विद्वान नेता भी लिखते है कि ऋषि को विष दिया गया था।

10. प्रो. मैक्स मुलर जो अंग्रेजों के साम्राज्य के समय के ऐतिहासिक लेखक थे और इनकी मृत्यु 1900 ई. में हुई। जिससे सिद्ध होता है कि महर्षि की मृत्यु के समय भारत में ही था। यह लिखता है "Swami Dayanand was a reformer and was in consequence exposed to much obloquy and persecution during his life time and his death was due to poison adminstered by his enemis." यहां स्पष्ट लिखा गया है कि स्वामी जी को उनके विरोधियों द्वारा विष दिया गया जिससे उनका निधन हो गया।

अंत में मेरा तो यही निवेदन है कि आर्य जगत प्रि. शर्मा जैसे लेखको की बात ना माने बल्कि उसका खंडन करे। इतिहास को सुरक्षित रखना भी हमारा कर्त्तव्य बनता है।

- राजवीर छिक्कारा, मो. 9811778655

आग्नेय पर्व (मन्त्र 1 से 114 तक)

- ज्ञानचन्द शास्त्री, बाल सेवा, आश्रम भिवानी

सामवेद भक्ति, उपासना का वेद कहा जाता है। गीता में भी इस वेद की महिमा इन शब्दों में कही गई है कि 'वेदानां सामवेदोऽसि' अर्थात् मैं वेदो में सामवेद हूँ। सामवेद में कुल 1875 वेद मन्त्र है। इस वेद को दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम पूर्वार्चिक तदनन्तर उत्तरार्चिक/मध्य में 640 से 650 तक 10 मन्त्रों का महानाम्न्यार्चिक नाम से भी मन्त्र समूह है। आर्चिक से अभिप्राय है-ऋचा अर्थात् मन्त्रों का समूह।

पूर्वाचिक भी चार भागों में विभक्त है, जो कि क्रमशः अग्नेय, ऐन्द्र, पावमान और आरण्यक पर्व से कहे जाते हैं। प्रथम अगन्य पर्व, जिसमें कि 114 वेद मन्त्र है। इन सभी मन्त्रों का प्रायः अग्नि देवता है, अतः इसे आग्नेय नाम से जाना जाता है। इस पर्व की सुन्दर व्याख्या वैदिक विद्वान प. श्री चमूपति जी द्वारा जीवन ज्योति नाम से की गई है। इस पावन वेद के प्रथम ही मन्त्र में भक्त की पुकार है-**अग्न आ याहि।** हे ज्ञानवान् भगवन्! प्रकाशस्वरूप प्रभो! आप कब से पुकारता है दिल, कभी तो भगवन् मिलोगे तुम। मेरा तो इस जहान् में, तेरे सिवा कोई नहीं।।

अग्ने त्वां कामये गिरा। (5) मैं तुम्हें स्तुति द्वारा तेरा यश गा, गा कर चाहता हूँ। स्तुति की भेंट ही है मेरे पास यही स्तुति ही मुझे तेरा प्रीति भाजन बनायेगी।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग न पुनर्भवम्। केवल एक ही चाह है, तुम्हें पाने की, तेरा दर्शन पाने की। गृर्णान्त देव कृष्टधः। (11) हे प्रकाशवान् भगवन्! सभी लोग तेरी ही आराधना कर रहे हैं। अतः मरुद्भिरग्न आ गहि।(16) हे परमात्मन्! आप सभी ज्ञानानन्दप्रकाश रश्मियों के साथ आओ, हमें प्राप्त होओ। आपका तो यही विधान ही है-

दधद्रत्नानि दाशुषे।(30) आप निज भक्त हेतु रमणीय उत्तम पदार्थों को धारण करते हो। देवेषु राजसि।(46)। यही तो आपका दिव्यत्व है, जो कि हमें प्रिय है। हमारा भी यही दृढ़ निश्चय है कि 'अया वर्धस्व तन्वा' (52) इसी जीवन में हमें वृद्धित्व की प्राप्ति करनी है, तुम्हें पाना है। यही तो आप की शाश्वत, सनातन वेदवाणी भी कही रही है।

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सुनृता। अच्छा वीरं **नर्य पक्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः।**(56)। तुझ ब्रह्माण्डपति को पाना, वेद विद्या की प्राप्ति एवं यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठ कार्यों का सम्पादन करना।

अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिवृणीमहे।(58) अग्नि देव को, भली प्रकार से उच्चारण किये गये वेदवचनों से हम वरण करते हैं। **भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसदि।**(66) उस प्रभु की संगति, उपासना में हमारी बुद्धि भद्र अर्थात् संसार का कल्याण करने वाली हो। **अबोध्यग्निः समिधा।**(63) भक्त जनों की समिधा से अग्नि देव उद्बुद्ध हुआ है।

याज्ञिक प्रतिदिन प्रातः सायं जिस यज्ञाग्नि को कुण्ड में स्थापित कर उद्बुद्ध करता है, प्रदीपन मन्त्र के द्वारा 'उद्बुद्धस्वाग्ने' के वाचन के साथ इन पवित्र संकल्प को दोहराता हुआ कि 'अयन्त इध्म आत्मा जातवेदः आत्म समर्पणपूर्वक, अब वही अग्नि उपासके के हृदय में जाग उठा है, प्रदीप्त हो गया है।

भ्रदा ते पूषन्निह रातिरस्तु।(65) हे पुष्टि देने वाले प्रभो! तुम्हारी मंगल दान-लीला हमेशा बनी रहे। **अग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।**(66) हे अग्निदेव! तुम्हारी यह कृपा हम पर बनी रहे। हम देव तुम्हारी प्रिय कल्याणी मति से युक्त समादृत (आदर को प्राप्त) हों। **दिवे दिव ईद्यो जागृवाद्भर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः।** (68)

नित्य जागरित रहने वाले मनुजों का है स्तुत्य वही। हविदाता यजमानों का भी पूजय सदा सर्वज्ञ वही।। इसी भावों से जुड़ा हुआ एक अनय प्रिय मन्त्र भी प्रारम्भिक मन्त्रों में पढ़ा गया था।

उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि ॥14॥ हे ज्ञानप्रकाश भगवन्! प्रतिदिन निरन्तर प्रातः सायं मन से धारण-ध्यान वृत्ति से स्तुति समर्पणपूर्वक आपको प्राप्त होते हैं।

राये अग्ने महे त्वा दानाय समधीमहि।(83) हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन! हम महान् दान, रमणीय दान मोक्षैश्वर्य के लिए तुम्हें प्रदीप्त करते हैं, सन्दीप्त करते हैं, अपने अन्दर प्रकाशित करते हैं।

अस्मे देहि जातवेदो महिश्रवः।(88) हे सर्वज्ञ प्रभो! आप हमें महान् धन, उत्तम ज्ञान, महती श्रुति, प्रदान कर। हमारे जीवन में आचरित करा, धारण करा अर्थात् हमारे में आचरित करा, धारण करा अर्थात् हमारे श्रुत्यानुकूल बने। मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।

मेधामाशासत श्रिये।(101) श्रि अर्थात्, कल्याणकारी स्थिति के लिए, उत्तम जीवन के निमित्त यज्ञ, बुद्धि, मेधा बुद्धि को हम चाहें, अभिलाषा करें।

यजस्व जातवेदसम्।(103) सर्वज्ञ प्रभु की स्तुति कर। वैदिक विद्या का जो निधि है, उसका भजन पूजन तू कर। उस जीवन धन का तू यजमान बन।

भ्रदो नो अग्निराहुतो भ्रदा रातिः सुमग भद्रो अध्वरः। भ्रदा उत प्रशस्तयः।(999) अग्नि देव हमारे लिये कल्याणकारी हो, प्रभु की दानधारा हमारे लिए कल्याणकारी हो। हिंसा रहित किया हुआ हमारा यज्ञ हितकर हो। हे उत्तमश्वर्यमय प्रभो! हमारी प्रशस्तियां प्रशंसायें, गुणगान-स्तुतियाँ भी कल्याणकारी, फलदायक हों। पूर्ण एवं पर्वीरूत प्रशस्तयः सफल एवं सिद्ध हो।

शोक समाचार

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि आत्मशुद्धि आश्रम के हितेशी व सहयोगी **श्री उम्मेद सिंह जी डरोलिया** निवासी नई बस्ती, बहादुरगढ़ का दिनांक 13.10.2024 को निधन हो गया। स्व. उम्मेद सिंह जी का सारा जीवन परोपकार में बिता। वे अनेक संस्थाओं के सदस्य थे। वे अपने पीछे माता जी और भरा परिवार छोड़ के चले गए।

आत्मशुद्धि आश्रम परविार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि परिवार को इस कष्ट को सहन करने की समार्थ प्रदान करें और दिवंगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रधान करें।

- विक्रम देव

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 5100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 350000/-आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

ईश्वर जीव और प्रकृति यही तीनों सृष्टि के मूल तत्व हैं

–श्री हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

यह वेदानुसार ऋषि दयानन्द की खोज है जो बिल्कुल सत्य है।

संसार में दो चेतन पदार्थ हैं- ईश्वर और जीवात्मा और एक जड़ पदार्थ है मूल प्रकृति अथवा उससे बना हुआ सम्पूर्ण प्राकृतिक जगत्।

प्रश्न यह था कि ईश्वर तो जड़ पदार्थ में भी व्यापक है तो इससे वह पदार्थ चेतन क्यों नहीं हो जाता? यह एक विचारणीय विषय प्रस्तुत किया गया है।

पहली बात तो यह है कि परमात्मा कैसा है कोई देख नहीं सका। परन्तु ज्ञानी लोग उसके होने का ज्ञान इस आधार पर करते हैं जैसे पढ़ते हुए विद्यार्थी को देखकर विद्या का ज्ञान होता है। जैसे पुत्र को देखकर उसके जन्मदाता पिता का ज्ञान होता है। जैसे किसी सुन्दर आभूषण को देखकर उसको बनाने वाले शिल्पी का ज्ञान होता है, जैसे किसी कारखाने में मानव उपयोग के लिए बन रही मशीनों को देखकर उसे बनाने वाले वैज्ञानिक का ज्ञान होता है उसी प्रकार मानव शरीर की विज्ञान संगत रचनाओं तथा जीवन उपयोगी भिन्न-भिन्न पंचतत्वों एवं सूर्य-चन्द्रादि की विधि पूर्वक सृष्टियों को देखकर सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर का ज्ञान स्वाभाविक रूप में हो जाता है। वह हमें भले ही न दिखता हो पर उसका होना सत्य है क्योंकि जो अति सूक्ष्म सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और जिसमें सर्वज्ञता का गुण है वहीं एकमात्र ईश्वर है और उसी ने बुद्धिपूर्वक सोच समझकर सर्वश्रेष्ठ मानव तथा अन्य सब प्राणी उत्पन्न हो सकने के लिए पहले उपयोगी पंच सूक्ष्म भूतों से, पंचतत्वों एवं सूर्य-चन्द्रादि को विभिन्न प्रकार के परमाणुओं के समूहों से निर्माण कर दिया उसके पश्चात् सागर नद-नदियाँ, पहाड़-पर्वत और वनस्पतियों की उत्पत्ति की। वनस्पतियों की उत्पत्ति पहले क्यों की क्योंकि वह जानता था कि प्राणियों की उत्पत्ति के पहले इन सबकी आवश्यकता पड़ेगी। उदाहरण के लिए जैसे शिशु जन्म के पहले ईश्वरीय नियम से माता के स्तन में दूध की व्यवस्था हो जाती है वैसे ही प्राणियों के उत्पन्न होने के पहले शुद्ध आक्सीजन एवं फलादि के लिए वृक्ष वनस्पतियाँ पहले उत्पन्न हुई।

यदि जड़ प्रकृति के कणों में ईश्वर चैतन्यता और सर्वज्ञता का गुण दे देता तो प्रकाश कणों के चुम्बकीय तरंग शब्दादि को वहन करने का गुलाम न बनता। आप जड़ पदार्थों से बातें भी कर सकते थे, यह संभव नहीं है क्योंकि सृष्टिक्रम के विरुद्ध है।

प्रश्न था कि यदि ईश्वर व्यापक है तो जड़ पदार्थ अथवा मूर्ति चेतन क्यों नहीं?

उत्तर- हमारे विचार से अग्नि में जलाने का गुण है और वह सब जगत् में व्याप्तमान है पर सभी उसके गुणों से जलने नहीं लगते।

2. सूर्य का प्रकाश सभी पदार्थों पर पड़ रहा है पर वे सब पदार्थ सूर्य जैसे प्रकाशवान नहीं बन सकते।

3. अग्नि का गुण, पृथिवी, जल, वायु, अन्तरिक्ष सभी में व्याप्त है पर वे चारों अग्नि तत्व नहीं बन सकते।

4. इस शरीर में आत्मा के द्वारा प्राण क्रियाशील है पर प्राण आत्मा के ज्ञातृत्व गुणों को नहीं अपना सकता क्योंकि प्राण चेतन से स्थूल है। इसी प्रकार ईश्वर कारण रूप प्रकृति से सूक्ष्म और आत्मा से भी सूक्ष्म है। इसलिए वह सर्वशक्ति सम्पन्न है। बनाने वाला बनने वाले पदार्थ से पृथक् होता है। अतः बनने वाला उपादान बनाने वाले का ज्ञानादि चैतन्यता गुणों को वह प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे बनाने वाला चैतन्य है तो उसके द्वारा जो पदार्थ बनते हैं वे उस जैसे चैतन्य नहीं हो सकते। वैज्ञानिकजनों ने जितने इलेक्ट्रॉनिक यन्त्र, दूरदर्शन, कम्प्यूटर आदि बनाये हैं वे सब जड़ कणों से बुद्धिपूर्वक बनाये गये हैं परन्तु वे यंत्र या उनके कण कभी भी स्वयं वैज्ञानिक नहीं बन सकते।

जड़ पदार्थ अपने आप न हिल सकता है न स्वयं कुछ बुद्धिपूर्वक बन जाने के उसमें गुण हैं- अतः उन कणों में जो गुण और गति है सब ईश्वर की देन है। जिसे व्यापक, प्रेरक और प्रकाशक कहा जाता है। वेद मंत्र कहता है कि-

यमेरिरे भृगवो विश्वेदसं नाभा पृथिव्या

भुवनस्य मज्मना। अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमेय एको वस्वो वरुणो न राजति। -ऋ 1/143/4

हे मनुष्यों! जो विद्वानों के द्वारा जानने योग्य सर्वव्यापक, प्रशंसा योग्य सच्चिदानन्द आदि लक्षणों वाला सर्वशक्तिमान अनुपम, अतिसूक्ष्म, स्वयंप्रकाशस्वरूप और अन्तर्यामी परमेश्वर है उसे योग साधना के अनुष्ठान की सिद्धि के द्वारा तुम अपने अन्दर जानो।

वैज्ञानिक ऋषि पतंजलि ने अष्टांग योग द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया था तभी तो अपने योगशास्त्र में कहा है- **क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।।** योग. 1/24

क्लेश, कर्मफल और वासनाओं से (अपरामृष्ट) असम्बद्ध पुरुष विशेष ईश्वर है। पाच क्लेश अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। ईश्वर जो पुरुष जीव-जीव नहीं किन्तु पुरुष विशेष है।

ईश्वर के अर्थ हैं 'ईशनशील' अर्थात् इच्छामात्र से सम्पूर्ण जगत् के उद्धार करने में समर्थ। योगदर्शन में-**तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्।** -योग. 1/25

ईश्वर को इस प्रकार समस्त ज्ञान का स्रोत कहते हुए बतालाया गया है कि वह (ईश्वर) जिसका काल विभाग नहीं कर सकता, पूर्व (देव्य) ऋषियों का भी गुरु है। यथा- **स पूर्वेमेशामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात।** योग 1/27, इस प्रकार ईश्वर के अस्तित्व को तो सभी दर्शनकारों ने माना है। यथा- ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात्। न्याय 4/1/19, मनुष्य के कर्मों के फल जिसके हाथ हैं, वही ईश्वर है। गीता के पाँचवें अध्याय में दर्शाया है। ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां... जिनका अन्तःकरण का अज्ञान विवेक ज्ञान द्वारा नाश हो जाता है, उनका वह ज्ञान सूर्य के सदृश उस ब्रह्म परमात्मा के स्वरूप को हृदय में प्रकाशित करता है अर्थात् साक्षात् करता है।

ईदृशेश्वरसिद्धि सिद्धाः। साख्य 3/57

स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता। साख्य 3/56

इन सूत्रों से ईश्वर की सिद्धि स्पष्ट शब्दों में बताई गई है। वह चेतन तत्व ईश्वर, प्रकृति जिसके अधीन ज्ञान व्यवस्था और नियमपूर्वक पुरुष के अपवर्ग के लिए प्रवृत्त हो रही है सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है।

1. जिसने सबको उत्पन्न किया वही ईश्वर है।
2. जिसने सृष्टि के आदि में वेदों का बीजात्मक ज्ञान दिया वही सर्वज्ञ है।
3. जो सब में प्राण के समान व्यापक और प्रकाशक है वही ब्रह्म है।
4. ईश्वर ने सूर्य की एक महत्वपूर्ण सृष्टि की है। किन्तु सूर्य में किन-किन उपादानों से कितनी संख्याओं में और किन-किन मात्राओं में कैसे क्या हो रहा है, इसका सही ज्ञान किसी को नहीं है। अतः जिसने सूर्यादि को उत्पन्न करके जिसमें अरबों वर्षों से तेजस्कृत उपादानों को अविरत ऊर्जा एवं अग्नि शिखाओं को उत्पन्न करने वाली उसके गर्भ में दिव्य अनजाने शक्तियों को प्रदान कर रहा है, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है और जिन सूर्य-चन्द्रादि के प्रभाव तथा पंचतत्वों से समुद्र एवं विभिन्न प्रकार के वनस्पतियों और जीवों का जन्म हुआ है, उन सबका निमित्त कारण ईश्वर है।

बहुत से वैज्ञानिकजन आत्माओं और परमात्मा को नहीं मानते। पर वह कोई भौतिक पदार्थ तो है नहीं कि जैसे न्यूट्रोनों कणों से टक्कर लगाया और हिग्सवोसन= गॉडपार्टिकल अर्थात् सृजनकारक कण (जो प्रकाश की गति से कई गुणा अधिक है) का आविष्कार हो गया। उसी प्रकार सर्वव्यापक, प्रेरक और प्रकाशक ईश्वर को भी वैज्ञनिक उसी जैसे कण के रूप में देखना चाहते हैं पर यह सम्भव नहीं है क्योंकि वह तो उनसे परे और सर्वव्यापक होने से उसकी कोई गति नहीं है। अतः उन्हें किसी मशीन के माध्यम से ईश्वर का दर्शन नहीं हो सकता। क्योंकि दिल्ली जाने वाली रेल से कोई कोलकाता नहीं पहुँच सकता। ईश्वर को देखने और उसके आनन्द का बोध करने के लिए साधन अलग है।

ऋषि दयानन्द की समाधि कभी 18 घण्टे की हो जाती थी इसलिए उन्हें भी अष्टांग योग की सिद्धि से सच्चे शिव परमेश्वर का साक्षात्कार हो गया था। उदाहरण के लिए एक बार ऋषि दयानन्द ने नास्तिक मुंशीराम से कहा था कि आपकी तर्कनाशक्ति प्रबल है। ऋषि ने कहा श्रद्धा की वेदी पर विश्वास का दीपक जलाओ, परमेश्वर का साक्षात्कार हो जायेगा। इस मानसिक दीक्षा ने उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया।

प्रश्न था कि ईश्वर जब मूर्त्ति में भी है तो वह चेतन क्यों नहीं हो जाती?

उत्तर- वायु में प्राणादि अनेक गुण हैं वह दिखता नहीं है पर सब जगह मौजूद है उससे कोई अलग नहीं है वह मूर्त्ति, मानव एवं मुर्दों में भी है किन्तु जैसे मूर्त्ति जड़ होने से वायु में विद्यमान प्राण को ग्रहण नहीं कर सकती, उसी प्रकार सर्वोपरि ईश्वर की चैतन्यता और सर्वज्ञता के गुणों को जड़ पदार्थ प्राप्त नहीं कर सकते। केवल चेतन प्राणी ही वायु से प्राण को ग्रहण कर सकते हैं।

प्रश्न- जब मानव को ईश्वर प्राप्त है, तो उसकी प्राप्ति के लिए कामना क्यों की जाती है।

उत्तर- सच्चिदानन्द परमात्मा तो सभी को प्राप्त है, पर 'सत् चित, जीव को उसका आनन्द अप्राप्त है।' जैसे- रसगुल्ला तो मानव को प्राप्त है पर उसका स्वाद कैसा है, नहीं जानता, जब उसे खाता है तभी पता लगता है कि वह कैसा है। इसी प्रकार जब तक मनुष्य ध्यान, धारणा, और साधना नहीं करता तब तक ईश्वरानन्द का बोध उसे नहीं हो सकता। तात्पर्य यह है कि 'सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर में सत्= प्रकृति से बना यह सारा संसार है। 'चित्= जीव है' और 'आनन्द ईश्वर है।' जब तक जीव अर्थात् मनुष्य, संसार की तरफ झुका रहेगा तब तक ईश्वरानन्द से वंचित रहेगा, और जब संसार में रहते हुए ईश्वर की तरफ ध्यान देगा तभी योगाङ्गों द्वारा वह स्वः स्वर्गरुप आनन्द को प्राप्त करेगा।

प्रश्न- माता-पिता के अनुसार ही गर्भ में शिशु का सर्वांग बनता है, जब जन्म लेकर बालक बड़ा होता है तो उसके मन, बुद्धि= मेधा और चेतना की उपज मस्तिष्क के स्नायु मण्डलों से ही होती है। कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों का सम्बन्ध भी मस्तिष्क के करोड़ों स्नायु कोशिकाओं से लगा रहता है। अतः उन सबका केन्द्र भौतिक मस्तिष्क ही है, आत्मा नहीं। इस विषय में आपका क्या कहना?

उत्तर- अमैथुनी काल में मानव उत्पत्ति के पूर्व, कोई नहीं जानता था कि स्त्री-पुरुष की सांचा किस डिजाइन के अनुसार बनाया जायेगा। में किन्तु कोई सर्वज्ञ (परम माता-पिता के समान) अदृश्य में विद्यमान था, तभी तो पंचतत्वों के सूक्ष्म भूतों तथा सूर्य-चन्द्र एवं दो भिन्न शक्तियों के गुणानुसार स्त्री और पुरुष का पहले सूक्ष्म शरीर में आकृति बनाया, उसके पश्चात् अनेक प्रकार के रासायनिक तत्वों एवं सूर्य के प्रकाश से जब हजारों वर्षों में 'रज-वीर्य' जैसे उपादान बन गए तब सूक्ष्म शरीर के साथ आत्माओं के संयोग से, उन दोनों के एकत्रित हो जाने पर अनेक स्त्रीलिंग और पुलिंग के भ्रूण उत्पन्न हो गए और वे भूमि माता की कुक्षी से रस प्राप्त कर पलने लगे, उसके पश्चात् नर और नारी (युवा-युवती) सब तिब्बत के आस-पास विचरने लगे।

इसी विषय को संक्षेप में 'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान' में इस प्रकार लिखा गया है- 'नर-नारी के संयोग के बिना ही जो शरीर धारण करते हैं उसे अमैथुनी सृष्टि कहते हैं। ईश्वरीय व्यवस्थानुसार 'रज-वीर्य' के मूल तत्वों के किसी विशिष्ठ आवरण में इकट्ठा होने पर देह रचना आरम्भ हो जाती है। कालान्तर में देह परिपक्व हो जाने पर आवरण फट जाते हैं और बने बनाये शरीर बाहर आ जाते हैं। यह ऐश्वरीय सृष्टि कहलाती है। तत्पश्चात् सजातीय प्रजनन का क्रम चालू हो जाता है, और सांचे में ढल-ढल कर नित्य नये शरीर बनने लगते हैं। परमेश्वर ने जीवात्मा को नहीं बनाया, अपितु उनके देह को बनाया।'

अतः स्त्री-पुरुष के विज्ञान संगत शरीर का निर्माण आत्मा के ज्ञातृत्व, कर्तृत्व और भोकृत्व के लिए ज्ञान स्वरूप परमात्मा के नियम द्वारा, मस्तिष्क की रचना भी अपने लिए नहीं आत्मा के लिए बना ताकि उसके द्वारा वह सोच-विचार और स्मरण कर सके। है। माना कि मन, बुद्धि, चेतना स्नायुओं का उपज मस्तिष्क है तो उन और साधनों से उनका भोग और सुख-दुःखों का अनुभव कौन करता है? देखिये आम को उत्पन्न करने वाला आम का वृक्ष है, पर उसका भोग (आम नहीं) मनुष्य करता है। इसी प्रकार शरीर में जितने साधन बने हैं वह सब सूक्ष्म शरीर से आत्मा के लिए बने हैं।

- मुकाम पोस्ट- मुरारई, जिला वीरभूम
मोबाइल- 08158078011

आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है।
- विक्रम देव आर्य

सद्गृहस्थ परस्पर सहयोग करें और दीर्घायु हों।

-डॉ. अशोक आर्य

गृहस्थ भी अग्नि का ही रूप है। जिस प्रकार अग्नि अपने तेज से दुरितों का नाश करती है, उस प्रकार ही गृहस्थ भी अपने ताप से सर्वत्र सुख, शान्ति की वर्षा करता है, परिवार की उन्नति के लिए सब प्रकार के उपाय करता हुआ निर्धन व बेसहारा का सहारा बनता है, भूखों को भोजन व कपड़ा से तृप्त करता है। इस प्रकार के परोपकारी कार्य करते हुए गृहपति न केवल स्वयं ही सौ वर्ष जीने का प्रयास करता है अपितु अन्यों का सहयोगी बनकर प्रयास करता है कि वह भी सौ वर्ष जीने का प्रयास करता है अपितु अन्यों का सहयोगी बनकर प्रयास करता है कि वह भी सौ वर्ष की पूर्णतया स्वस्थ व सम्पन्न आयु प्राप्त करें। इस बात को यजुर्वेद के मन्त्र संख्या 2.27 में इस प्रकार स्पष्ट किया गया है-

अग्ने गृहपते सुगृहपतिस्त्वयागनेऽहं गृहपतिना भूयासम्। सुगृहस्पतिस्त्वं मयाऽग्ने गृहपतिना भूया: अस्थूरी नौ गार्हपत्यानि सन्तु शत हिमा: सूर्यस्याव्रतमंवावरते॥

शब्दार्थ- (हे गृहपते अग्ने) हे गृहपति अग्नि (त्वया) तुझ (गृहपतिना) गृहपति से (अहम्) मैं (सुगृहपति:) उत्तम गृहपति (भूयासम) बनूँ (हे अग्ने) हे अग्नि (त्वं) तू (मया) मुझ (गृहपतिना) गृहपति से (सुगृहपति:) श्रेष्ठ गृहपति (भूया) होओ (नौ) हम दोनों का (गार्हपत्यानि) गृहपतित्व (अस्थुरी) परस्पर सम्बद्ध (सन्तु) हो (प्रातं हिमा) सौ वर्ष तक (सूर्यस्य) सूर्य के (आवृतं अनु) परिवर्तन के अनुकूल (आवते) नियमित रूप से कार्य करूँ।

भावार्थ- हे गृहपति अग्निदेव! तुम्हारी सहायता से मैं श्रेष्ठ गृहपति बनूँ। हे अग्नि! तँ भी मुझ गृहपति से सुयोग्य गृहपति होवो। हम दोनों का गृहस्वामित्व परस्पर संबद्ध हो। मैं सूर्य की परिक्रमा के समान सौ वर्ष तक नियमित क्रम वाला होऊँ।

गृहस्थरूपी रथ के दो महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। इन दो अंगों में से एक भी बिगड़ गया तो यह गाड़ी रुक जाती है। इसलिए गृहस्थ की गाड़ी चलाने के लिए दोनों का सुचारु रूप से कार्यशील रहना आवश्यक है। यह दो अंग हैं- (1) पति (2) पत्नी। इन दोनों का सम्मिश्रण ही गृहस्थ है। इन दोनों को मिलाकर इन्हें दम्पति कहा जाता है। वेद के इस मन्त्र में इस दम्पति को ही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शिक्षा दी गयी है। कहा गया है कि गृहस्थ के यह दोनों अंग अर्थात पति व पत्नी, सदा मिलकर रहें, सब कार्य मिलकर करें तथा परस्पर सौहार्दयुक्त ढंग से रहें।

मन्त्र में एक पंक्ति आती है **'अस्थूरी नौ गार्हपत्यानि सन्तु'**। यह पंक्ति जब हम पारिवारिक जीवन के लिए प्रयोग करते समय तथा इसके अर्थ को समझें तो मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यह पंक्ति स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने की योग्यता रखती है। इसमें स्थूरी शब्द अपने में जो अर्थ लिए है वह है- **'एकांगी'** अथवा **'एकव्यक्तिनिष्ठ'** जबकि अस्थूरी का अर्थ है सम्मिलित, समन्वित अथवा सम्बद्ध। जैसे कि ऊपर कहा गया है कि पति तथा पत्नी गृहस्थरूपी रथ के दो पहिये हैं। दोनों का समान महत्त्व है। दोनों का समान रूप से गतिशील होना आवश्यक है। यदि दोनों में से कोई एक ने भी अपना संतुलन खो दिया तो गृहस्थ की यह गाड़ी लड़खड़ाती है, आगे बढ़ने की क्षमता खो देती है। अत: यह रथ तब तक ही सुरक्षित रूप से कार्य कर सकता है, जब तक यह दोनों पहिये सुरक्षित रहते हुए गति में हैं। यदि कभी इन दो पहियों में से एक पहिया भी अपने कार्य को सुचारु रूप से करने की क्षमता से विहीन हो गया तो गृहस्थ की यह गाड़ी चलना तो क्या इसका लड़खड़ाकर चलना भी असंभव हो जाता है। इसलिए कहा गया है कि हे गृहस्थ! तू स्थूरी न रह अर्थात् अकेला न रह अपितु अस्थूरी बन अर्थात् दोनों मिलजुलकर रहो, साथ-साथ चलो, कदम मिलाकर चलो, तब ही आपका कल्याण संभव है, अन्यथा विनाश का मार्ग तो खुला ही है।

गृहस्थ रूपी रथ को मिलजुल कर चलाने से ही वह ठीक ढंग से चलेगा, अन्यथा कल्याण नहीं करेगा। नष्ट का, विनाश का मार्ग पकड़ लेगा। यह तथ्य

बार-बार इसलिए दोहराया जा रहा है ताकि हम इसे सदा स्मरण रखें तथा तदनुरूप आचरण करें। इस नाव को मझधार में उतारने के लिए पति व पत्नी दोनों में समन्वय होना आवश्यक है। समन्वय जोड़ने का काम करता है, समन्वय के साथ ही साथ एक दूसरे के प्रति संवेदना की भावना भी होनी चाहिए। यदि एक दूसरे के कष्ट को अपना नहीं समझेंगे, कष्ट के समय एक दूसरे का सहयोग नहीं करेंगे तो यह नाव आगे कैसे बढ़ेगी? इसलिए एक दूसरे से सहानुभूति का होना भी आवश्यक है, सामंजस्य बिठाना भी एक आवश्यक तत्त्व है, यह तत्त्व होंगे तब ही दोनों एक-दूसरे के लिए संवेदना रख सकेंगे तथा संवेदना होगी तो समन्वय होगा। यह समन्वय ही उन्नति का साधन है, जो दोनों के लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगा। जब परिवार समन्वय आदि इन गुणों से युक्त होगा तो परिवार में सदैव सफलता के ही दर्शन होंगे। सफल परिवार में सदा धनैश्वर्य व श्री की वृद्धि होती है, सुखों की वर्षा होती है, ख्याति बढ़ती है तथा लोग इस परिवार का अनुगमन करते हैं।

मन्त्र के दूसरे खण्ड में प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हे प्रभु! यज्ञ हमारी उन्नति करे। सब जानते हैं कि यज्ञ से रोगों का नाश होता है, पर्यावरण शुद्ध होता है। न केवल यज्ञ द्वारा उन्नति की मांग करते हुए यज्ञ को प्रतिष्ठित करने की कामना की गई है। अपितु वेदमन्त्र के इस आशय को गीता के अध्याय तीन के श्लोक 11 में इस प्रकार व्यक्त किया गया है- **देवान् भावयातानेन, ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः, श्रेय-परम-वाप्स्यथ॥** गीता 3.11

इसका भाव यह है कि मनुष्य यज्ञ के द्वारा देवों को प्रसन्न करे। देव किसे कहते हैं? जो दे उसे देव कहते हैं। इसलिए जब हम देवों को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करते हैं तो देव प्रसन्न होकर प्रतिफल स्वरूप हमारे लिए सुख-समृद्धि की वर्षा कर हमें भी प्रसन्न करते हैं। जब देव भी प्रसन्न हैं तथा मनुष्य भी प्रसन्न हैं तो दोनों की प्रसन्नता से दोनों के पास ही धन धान्य के अपार भंडार होने से सुखों व श्री की वृद्धि होती है। जिसे हम पाने के लिए आजीवन भटकते हैं, वह सब हमें यज्ञ से ही मिल सकता है तो फिर हम इसे अपने जीवन का अंग क्यों न बनायें?

इस प्रकार मन्त्र के दोनों भागों में सुखी जीवन व्यतीत करते हुए शतवर्षीय आयु की कामना की गयी है। जब पति-पत्नी आपस में समन्वय बनाते हुए मिलजुलकर रहेंगे तथा यज्ञमय जीवन बनाते हुए प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ करेंगे तो जीवन में सदैव सुख ही सुख मिलेंगे तथा यज्ञ करेंगे तो सर्वत्र सुख के साथ ही साथ शान्ति भी मिलेगी। जब सुख, शान्ति, समृद्धि व श्री के स्वामी बन गए तो चिंता रहित जीवन तो लंबा होगा ही। इस प्रकार आयु भी लम्बी होगी तथा शत ही नहीं इससे भी अधिक आयु जीवन जीने का अवसर मिलेगा। इसे पाने के लिए हमें आपस में सामंजस्य व सहानुभूति के साथ एक-दूसरे के सहयोग की इच्छा शक्ति पैदा कर यज्ञमय जीवन

बनाकर यज्ञों को अपनाना आवश्यक है।

- जी-7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी,
जिला-गाजियाबाद

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म- शुद्धि- आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा।

इच्छुक साधक-साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक,
चलभाष: 9416054195

हम दानव नहीं, मानव बने

-कन्हैया लाल आर्य

अथर्व वेद के आठवे काण्ड के सूक्त संख्या दो मन्त्र संख्या 8 का एक मन्त्र है-

आरादरातिं निऋतिं परोग्राहिं क्रव्याद: पिशाचान्। रक्षो यत्सर्व दुर्भूतं तत्तम् इवाप हन्मसि॥

जिन व्यक्तियों में दान न देने की वृत्ति होती है, जो अदानी होते है वह दानव है क्योंकि दान न देने की वृत्ति भोग प्रवण बनाती है, यही भोग प्रवणता. मृत्यु की ओर ले जाती है। इसके विपरीत जो दानशील है वह मानव है जोकि दान देने की वृत्ति त्याग प्रवण कहलाती है यही त्याग प्रवणता मोक्ष की ओर ले जाती है। हम मान तभी पा सकते हैं जब हम दानशील बनें। दानशील व्यक्ति न केवल मान पाता है बल्कि उसकी आत्मा को भी संतोष मिलता है, मान मिलने से यश की प्राप्ति भी होती है।

एक बार की घटना है कि किसी धार्मिक स्थल पर एक पवित्र यज्ञ चल रहा था एक सज्जन प्रति दिन उस आयोजन में सम्मिलित होते थे। यज्ञ के समापन पर उस सज्जन ने धन की पोटली संयोजक महोदय को जैसे ही प्रदान की। संयोजक महोदय ने कहा-'आईये सेठ जी' मंच पर आइये सेठ जी ने कहा कि मंच पर तो इस धन की पोटली को रखिये, मैं इतने दिन से कार्यक्रम में आ रहा था, आपने मुझे मंच पर कभी नहीं बुलाया आज कैसे मैं सेठ जी भी हो गया और मंच पर भी बुलाना चाहते हैं क्या बात है। 'संयोजक महोदय ने कहा महाशय जी, यह धन की पोटली आपके पास थी तब तक आप केवल आप थे, जब आपने इस धन की पोटली का त्याग किया, दान किया तभी आप सेठ जी भी कहलाये जा रहे हैं और मंच पर भी निमंत्रण किया जा रहा है, तभी आपको मान भी मिल रहा है अत: दानशीलता व्यक्ति को दानवता से हटाकर मानवता की ओर जोड़ती है, यश और मान की प्राप्ति भी कराता है अत: आराति न बनें, दानशील बने। इसीलिए तैत्तरीय उपनिषद में कहा है-

श्रद्धया देयम- श्रद्धा से दान करना चाहिए।

अश्रद्धया देयम्-अश्रद्धा से भी दान करना चाहिए।

श्रिया देयम्- प्रसन्नता (यश) के लिए दान करना चाहिए।

ह्रिया देयम्- लज्जा से दान देना चाहिए।

भिया देयम्- भय से दान देना चाहिए।

संविदा देयम्- प्रेम भाव से दान देना चाहिए।

जिस घर में कलह होता है उस कुल को निऋति ग्रहीत कहते है। घर में कलह विनाश का कारण है यह दानवता है। जिस घर में शान्ति होती है उस घर में उन्नति और ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। घरों में अनेकों बार झगड़े होते है। सास अपनी बहू के दोष पुत्र को कहकर पुत्र की पीड़ा को बढ़ाती रहती है और पत्नी अपने पति से सदैव अपनी सास की शिकायत करती रहती है यही दानवता है। पुत्र तथा पति के रूप में यदि युवा केवल चुप ही रह जाता है, न्याय और अन्याय का निर्णय नहीं करता। यह भी मानवता नहीं है इसे मानसिक हिंसा भी कह सकते है। यदि आप घर के मुखिया है और आप न्यायपूर्ण निष्पक्ष व्यवहार नहीं करते तो समझो आपमें मानवता की कमी है। पुत्र अपनी मां को और पति अपनी पत्नि को यदि सदैव प्रसन्न रखना चाहता है तो उसे निष्पक्ष होकर न्यायपूर्वक निर्णय करना होगा समझौता भी न्यायपूर्ण होना चाहिए। कोई भी पुत्र अपनी मां को पूरी सुविधायें नहीं दे सकता और न ही कोई पति अपनी पत्नी को पूरी सुविधायें दे सकता है ऐसे में दोनों की सीमाओं का ध्यान रखते हुए निष्पक्षता पूर्वक निर्णय ले यही मानवता है, यही सच्ची अहिंसा है किसी के प्रति अन्याय दानवता एवं हिंसा है।

शरीर मन, वाणी से किसी को अन्याय पूर्वक किसी कारण कोई कष्ट न दिया जाना अहिंसा एवं मानवता है, न्यायपूर्ण व्यवहार करना मानवता है, अन्यायपूर्ण व्यवहार सहना भी दानवता है। न्यायपूर्ण व्यक्ति का समर्थन न करना भी हिंसा एवं दानवता है। यदि आप किसी सभा में जा रहे है वहाँ यदि आप किन्हीं स्वार्थी के कारण न्याय के पक्ष नहीं ले रहे तो भी मानवता के विरोधी है। जिस सभा में असत्य पक्ष

लिया जाता है वह सभा मरे हुए लोगों की सभा मानी जाती हे। दुर्योधन, दु:शासन ने द्रोपदी का भरी सभा में अपमान किया था तब द्रोपदी ने द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह को उलाहने भरे शब्दों में कहा था यह सभा सभा नहीं है यह तो मरे हुए लोगों की सभा है। यदि आप सच्चे अहिंसक और मानव की कोटि में आना चाहते है तो आप को सभा में भी सत्य को सत्य कहने का साहस होना चाहिए।

लोभ वृत्ति भी दानव होने के लक्षण है जो व्यक्ति लेता ही लेता है, लेने में विश्वास रखता है देने में नहीं, वही दानव बन जाता है, धन ही उसके जीवन का उद्देश्य बन जाता है, यही उसके निधन का कारण बन जाता है। जो महान व्यक्ति वेद के सत्य नियमों का पालन (जैसे ब्राह्मण का कर्तव्य है कि दान लेना और दान देना) नहीं करता है वह पतित माना जाता है, जो लेता है परन्तु देने का स्वभाव नहीं है, वह ब्रह्म आज्ञा के विरूद्ध आचरण करता है, ऐसे बिगड़े पतित ब्राह्मण को निऋति एवं लोभी कहा है वह मानव भी दानव की श्रेणी में चला जाता है।

जो क्षत्रिय अपनी रक्षा करने के स्वभाव को छोड़कर दूसरे प्राणियों और मनुष्यों के मांस का भक्षण करता है, लुटेरा बन जाता है ऐसे गिद्ध, कौवे, शेर, चीतों की तरह दूसरों की मांस को अपने पोषण के लिए प्रयोग करता है ऐसे पतित क्षत्रिय को दानव के ''क्रव्याद'' श्रेणी में रखा जाता है।

जो वैश्य गरीबों को दान देने की बजाय गरीबों का रक्त पी जाते है, ब्याज पर ब्याज लगा कर, निर्धन को जीवित अवस्था में मरे हुए के तुल्य कर देते है, पशुओं से अधिक परिश्रम लेकर उन्हें कम भोजन देकर दुखी करते है, अपने कर्मचारियों से अधिक कार्य कराकर उन्हें कम परिश्रमिक देते है वह वैश्य भी पतित श्रेणी में माने जाते है, वह भी दानव की कोटि के होने का कारण पिशांच कहलाते हैं।

क्रूर कर्म करने वाले मानव को राक्षस कहते है। शरीर से उत्तम कर्म करने वाले को जो सबकी सेवा करता है, सेवा के द्वारा ही प्रभु की प्राप्ति करता है, उसे शूद्र कहते है। शूद्र जो कि उत्तम गुण, कर्म से युक्त था, उसे त्यागकर दुष्ट कर्मों में प्रवृत हो जाता है, दूसरों की सेवा न कर उन्हें हानि पहुंचाता है, सदा दुष्ट कर्मों को करता है। सज्जनों के प्रति बुरा व्यवहार और दुर्जनों के प्रति मित्रता का भाव रखता है वह मानव श्रेणी से पतित होकर दानव श्रेणी में आ जाता है।

हमारे किसी कर्म से किसी को बाधा पहुँचे इसे भी दानवता व हिंसा कह सकते हैं। हमारे किसी कर्म से किसी को बाधा न पहुंचे इसे मानवता कहते हैं। दूसरों के प्रति गलत सोचना भी दानवता है इससे हमारी संस्कार दूषित हो जायेंगे इससे पाप और बढ़ेगें। शरीर और वाणी से जो हम हिंसा करते है, वह पहले मन से शुरू होते है अत: हमें पहले मानसिक हिंसा से बचना चाहिए। यही हिंसा हमें दानवता की ओर ले जाती है। स्वतंत्रता अच्छी बात है परन्तु स्वच्छन्दता दानवता है। सामान्य व्यवहार में दूसरों को प्रेम से समझाये, यदि बार-बार समझाने पर भी वह नहीं मानता तो कठोरता का प्रयोग कर सकते है यह कठोरता भी मानवता है, हिंसा नहीं है। परन्तु यदि बिना किसी कारण के क्रोध व द्वेष के कारण कठोर वाणी का प्रयोग हो रहा है तो यह भी दानवता है। यदि हम पक्षपात और वैर भाव को भुलाकर कार्य करेंगे तो सृष्टि आनन्दमयी हो जायेगी।

अत: हमारा कर्त्तव्य है कि सबसे प्रीति रखते हुए परन्तु महर्षि दयानन्द के शब्द के अनुसार 'सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य वर्तना चाहिए।' की भावना के अनुसार कर्म करेंगे तो समाज में मानवता के गुणों का विकास होगा।

-मन्त्री परोपकारिणी सभा, अजमेर राजस्थान
व बिल्ला न. 23-24, सैक्टर-70, गुरुग्राम
मो. 911197073

आवश्यकता

गुरुकुल के छात्रों के लिए मुख्य आवश्यकता स्कूल पुस्तक की है जो भी भक्त जन इसमें सहयोग करना चाहते है कर सकते है, सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें- **आचार्य अमृत आर्य, मो. 9990108323**

नशे नाश की निशानी: शराब तथा धूम्रपान

-राममुनि आर्य वानप्रस्थ

ऐ शराब पीने वालो!

शराबी को शराब कह रही है कि मेरा काम है जो मुझे पीयेगा उसका सर्वनाश किये बिना नहीं छोड़ती, क्योंकि सर्वनाश करना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। जितने भी धर्मशास्त्र हैं, उनमें सुरापान को महापापों की जड़ बताया है। यह मनुष्य को राक्षस बना देती है। यह नशे समाज और देश को नष्ट कर देते हैं और कर रहे हैं।

सुनियें-एक सज्जन से एक दुर्जन नशेबाज की वार्ता-

सज्जन- हे शराबी क्या आप मांस भी खाते हो, हाँ शराब और मांस दोनों पीता खाता हूँ।

सज्जन-क्या आप वेश्याओं के पास भी जाते हो, हाँ उनके साथ मिल के पीयें खायें तो अच्छा लगता है।

सज्जन-वेश्यायें तो धन चाहती हैं, आप धन कहाँ से लाते हो?

शराबी-मैं चोरी और जुआ खेलकर पैसा लाता हूँ।

सज्जन-अच्छा आप चोरी भी करते हो और जुआ भी खेलते हो?

शराबी- हाँ जो नष्ट होना चाहे उसका और काम ही क्या है।

किसी कवि ने कहा है-

मुल्कों-मुल्कों की सैर करना, यह तमाशा किताब में देखा। दाम दे करके जूतियाँ खाना, यह तमाशा शराब में देखा।।

जैन मत में शराब का निषेध- शराब के आधीन होकर मनुष्य तरह-तरह के निन्दनीय कर्म करता है। उसे इस लोक में भी अनेक दु:ख भोगने पड़ते हैं, और परलोक में भी दु:ख भोगता है। शराबी की जेब में जो कुछ धन या वस्तु होती है उसे दूसरे लोग ही छीनकर ले जाते हैं। होश आने पर उसे पाने के लिये इधर-उधर मारा-मारा ढूँढ़ता फिरता है। शराब पीने से बुद्धि नष्ट हो जाती है।

शराब के विषय में महात्मा बुद्ध का सन्देश

(1) हे मनुष्यो!-तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना। वहाँ पराक्रम की परीक्षा है। तुम तलवार के नीचे सिर देने से भयभीत न होना-यह बलिदान की कसौटी है। तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना-वह धैर्य की परीक्षा है। परन्तु शराब से सदा भयभीत रहना-यह पाप और अनाचार की जननी है।

(2) जिस राजा के राज्य में यह 'सुरा' आदर पाती है वह राज्य शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। इतिहास में इस बात के कितने ही प्रमाण हैं। इस बुराई के कारण कई साम्राज्य मिटी में मिल गये। कृष्ण वंश की यादव जाति इसी बुराई के कारण नष्ट हुई। रोमन देश के पतन का मुख्य कारण यही पापिनी शराब ही थी। शराब से बढ़कर कोई ऐसी नशीली वस्तु नहीं है जो मनुष्य के नाश में लगी हो। यह शराब तो जहर से भी बुरी है जहर से तो शरीर ही मरता है। परन्तु शराब से तो सारा परिवार ही उजड़ जाता है।

गुरु ग्रन्थ साहब में गुरु नानकदेव जी ने कहा है-माड़ा नशा शराब दा, उतर जाये प्रभात। नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, इस शराब को मत पीवो, इसके पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है पेट में विकार पैदा हो जाते हैं और अपने-पराये का ध्यान नहीं रहता। उनके तीर्थ स्नान, व्रत, उपवास सब नष्ट हो जाते हैं और इसके पीने वाले सब नरक में जाते हैं, नाली के कीड़े बनते हैं। इसलिये थोड़ा-सा बुद्धि से सोचिये और समझिये। क्या आप शराब पीने जा रहे हैं? यदि हाँ तो रुकिये और सोचिये-

(1) वह कौनसी वस्तु है जो शरीर, बुद्धि और आत्मा का विनाश कर देती है? (2) वह कौनसी वस्तु है जो दुराचार और अपराधों की जननी है? (3) वह कौनसी वस्तु है जो मनुष्य को दोपाया पशु बना देती है और सुखी घर को नरक बना देती है। उनके बच्चे दाने-दाने को मोहताज़ हो जाते हैं और घरवाली जहर खाकर बच्चों सहित मर जाती है। अरे कुछ तो विचारो? क्या इन नशों को छोड़ कर तुम नेक इन्सान नहीं बन सकते?

याद रखिये- बड़े पुण्य कर्मों के बदले में यह

सुन्दर मनुष्य तन मिलता है इसे नशों में पड़कर बरबाद मत करो। याद रखो यह जीवन अनमोल है। इसे श्रेष्ठ चरित्र वाला बनाओ। आज ही प्रतिज्ञा करो इन बुरे कर्मों को छोड़ने की और परमात्मा से प्रार्थना करो कि हे परमात्मा हे पिता मुझे इन पाप कर्मों से बचाओ।

न करो बरबाद जीवन को,
ऐ नशों के दीवानों।
वही काटोगे तुम बुढ़ापे में,
जो बोवोगे जवानी में॥

शराब जान और माल दोनों को लूटती है। याद रखिये-डाकू तो माल लेकर जान छोड़ देता है किन्तु यह पिशाचिनी शराब तथा नशे जान और माल दोनों को लूट लेते हैं और नशेबाज़ जल्दी ही मौत के घाट उतर जाते हैं। भाँग कहती है, हे गधे! तू मुझे क्यों नहीं खता। गधा उत्तर देता है-हे भाँग! तेरे पीने से मनुष्य भी गधे बन जाते हैं फिर गधे की क्या दशा होगी? हे नशा करने वालो नशों से बाज़ आओ। मैं सत्य कहता हूँ कि नशा छोड़ो मैं तुम्हें गरीब से अमीर बना दूँगा। नशा छोड़ो, मैं तुम्हें लखपति बनवा दूँगा। नशा छोड़ो मैं तुम्हारी बुढ़ापे की पैन्शन बनवा दूँगा। जितने रुपये आप रोज़ाना नशों में खोते हो, मांस, अण्डे, शराब, अफीम, भाँग, सुल्फा, गाँझा, हुक्का, बीड़ी, सिगरेट गुटखे खाने में खर्च करते हो, उतने रुपये रोजाना बचाकर एक लोहे की गुल्लक या डिब्बे में डाल दिया करो और हर महीने में इन्हें निकाल कर डाकखाने में खाता खोलकर डाल दिया करो कुछ ही वर्षों में आप लखपति बन जायेंगे। इसलिये सब मनुष्यों को इन सारे नशों का सर्वथा त्याग करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये और अपने बचे हुये जीवन को अच्छे कार्यों में लगाना चाहिये जिस ईश्वर ने इतना सुन्दर शरीर दिया है उस ईश्वर की भक्ति में, उसकी उपासना में जिसका मुख्य निज नाम ओ३म् है, जो आपकी हर समय रक्षा करता है उसका ध्यान करें। वेद, शास्त्र, उपनिषदों को, सत्यार्थप्रकाश को पढ़ें, जिससे आपका जीवन सुधरे।

हुक्का, बीड़ी, सिगरेट पीने वालो ध्यान से समझो-आप अपने मुख से निकला हुआ झूठा धूआं आपके रोग भी जिसमें मिले हुये हैं उसे आप दूसरों के अन्दर हवा के द्वारा जबरदस्ती डालते रहते हो इसके पाप के भागी आप ही तो बन रहे हैं। जैसे हम अपने मुख में से भोजन निकाल कर दूसरे को नहीं खिला सकते वैसे ही यह धूवां भी हवा के द्वारा दूसरों के अन्दर उनके सांस द्वारा यह झूठा धूआं रोगों सहित जाकर दूसरों को रोगी बनाता है इसलिये इस महापाप से बचो, आज ही प्रतिज्ञा करो कि हम हुक्का, बीड़ी, सिगरेट का सेवन नहीं करेंगे। (सब प्रकार के नशे छोड़ने के लिये अनुपम औषधि) सौ ग्राम अजवायन-बारीक-पचास ग्राम सौंफ बारीक लेकर उसे तीन बार धोकर उसे दूसरे बर्तन में उतार लें नीचे जो कंकर पत्थर बचे उसे अलग करें फिर पानी में उतारी हुई अजवायन एक कपड़े में डालकर पानी को पूरा निचोड़ दें और एक कांच के बर्तन में डालकर फिर इसमें छः नींबूओं का रस निकाल कर डालें और चार चम्मच सेन्धा नमक पिसा हुआ डाल कर चम्मच से अच्छी तरह मिला दें और रातभर भीगने के बाद अगले दिन लोहे की कढ़ाई में डालकर पानी को सुखा दें और ठण्डा होने पर शीशी भरकर रख लें थोड़ा सा चूर्ण एक पुड़िया में अपनी जेब में रखें और जब नशे की तलब उठे तो एक चुटकी चूर्ण मुख में डालकर रस चूसते रहें इसे थूकना नहीं है। (इस दवाई से लाभ) गैस, अफारा, बदहज़मी, खट्टी डकारें दूर करके नशे की आदत से छुटकारा दिलाती है और पेट को साफ करके कब्ज को दूर करती है।

परहेज़-नशे की वस्तु को बिल्कुल त्याग दें और अपने मन में प्रतिज्ञा करें कि मैं अब किसी भी नशे की वस्तु का सेवन नहीं करूँगा और एक अच्छा धार्मिक इन्सान बनकर अपने बचे हुये जीवन से धर्म के कार्य करूँगा।

हे प्रभु मुझे बुरे कर्मों से छुड़ाकर अच्छे कर्म करने में लगाओ। ऐसी प्रार्थना ईश्वर से नित्यप्रति करनी चाहिये।

अन्त में मैं यही कहूँगा, अय! पिशाचनी शराब तूने, कौमों को मिटाके छोड़ा। जिस घर में तू घुसी, तूने उसे मिटा के छोड़ा। राजाओं के राज छीनें, शाहों के ताज छीने, इन नशेबाजों को तूने जड़ से मिटा के छोड़ा। धन्यवाद। आपका शुभचिन्तक

-स्व. राममुनि आर्य वानप्रस्थ
पैट्रोल पम्प के सामने वाली गली, झज्जर रोड (कमला नगर) रोहतक (हरियाणा) मो. 09034865073

स्वास्थ्य रक्षा में अमरूद

-डॉ. मधुर प्रकाश

अमरूद एक सस्ता और गुणकारी फल है जो प्राय: सारे भारत में पाया जाता है। संस्कृत में इसे अमृत फल भी कहा जाता है।

आयुर्वेद के मतानुसार पका हुआ अमरूद स्वाद में खट्टा-मीठा, कसैला, गुण में ठंडा पचने में भारी, कफ तथा वीर्यवर्धक, रुचिकारक, पित्त दोषनाशक, वातदोषनाशक एवं हृदय के लिए हितकर है। अमरूद पागलपन, भ्रम, मूर्छा कृमि, तृष्णा, शोध, श्रम, विषम ज्वर (मलेरिया) तथा जलनाशक है। यह शक्तिदायक, सत्त्वगुणी एवं बुद्धिवर्धक है। भोजन के एक-दो घंटे के बाद इसे खाने से कब्ज, अफरा आदि की शिकायतें दूर होती हैं। सुबह खाली पेट अमरूद खाना भी लाभदायक है। अधिक अमरूद खाने से वायु, दस्त एवं ज्वर की उत्पत्ति होती है तथा मन्दाग्नि एवं सर्दी भी हो जाती है। जिनकी पाचन शक्ति कमजोर हो, उन्हें अमरूद कम खाना चाहिए।

अमरूद खाते समय इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि इसके बीज ठीक से चबाये बिना पेट में न जायें। अमरूद को या तो खूब अच्छी तरह चबाकर निगलें या फिर इसके बीच अलग करके कंवल गूदा ही खायें। इसका साबुत बीज आन्त्रपुच्छ (अपेंडिक्स) में चला जाये तो फिर बाहर नहीं निकल पाता, जिससे प्राय: अपेंडिसाइटिस होने की सम्भावना होती है।

खाने के लिए पके हुए अमरूद का ही प्रयोग करें। कच्चे अमरूद का उपयोग सब्जी के रूप में किया जा सकता है। दूध एवं अमरूद खाने के बीच दो-तीन घंटों का अन्तर अवश्य रखें।

अमरूद के औषधरूप में प्रयोग

सर्दी-जुकाम- जुकाम होने पर एक अमरूद का गुदा बिना बीज के खाकर एक गिलास पानी पी लें। दिन में ऐसा दो-तीन बार करें। पानी पीते समय नाक से सांस न लें और न छोड़ें। नाक बंद करके पानी पियें और मुंह से ही सांस बाहर फेंके। इससे नाक बहने लगेगा। नाक बहना शुरू होते ही अमरूद खाना बंद कर दें। एक दो दिन में जुकाम खूब झड़ जाये तब रात को सोते समय पचास ग्राम गुड़ खाकर बिना पानी पियें सिर्फ कुल्ला करके सो जायें। जुकाम ठीक हो जायेगा।

खांसी- एक पूरा अमरूद आग की गरम राख में दबाकर सेंक लें। दो तीन दिन तक प्रतिदिन इस प्रकार एक अमरूद खाने से कफ ढीला होकर निकल जाता है और खांसी में आराम हो जाता है। अमरूद के पत्ते पानी से धोकर साफ कर लें और फिर पानी में उबालें। जब उबलने लगे तब उसमें दूध और शक्कर डाल दें, फिर उसे छान लें। इसको पीने से खांसी में आराम मिलता है। इसके बीजों को बहीदाना कहते हैं। इन बीजों को सुखाकर पीस लें और थोड़ी मात्र में शहद के साथ सुबह शाम चाटे। इससे खांसी ठीक हो जायेगी। इस दौरान तेल एवं खटाई का सेवन न करें।

सूखी खांसी- इसमें पके हुए अमरूद को खूब चबाकर खाने से लाभ होता है।

कब्ज- पर्याप्त मात्र में अमरूद खाने से मल सूखा और कठोर नहीं हो पाता और सरलता पूर्वक शौच हो जाने से कब्ज नहीं रहता। अमरूद काटने के बाद उस पर सौंठ, काली मिर्च और सेंधा नमक भुरभुरा ले। फिर इसे खाने से स्वाद बढ़ता है और पेट का अफरा, गैस तथा अपच दूर होता है। इसे सुबह निराहार (खाली पेट) खाना चाहिए या भोजन के साथ खाना चाहिए।

मुख के रोग- इसके कोमल हरे ताजे पत्ते चबाने से मुंह के छाले नरम पड़ते है। मसूढ़े तथा दांत मजबूत होते हैं, मुंह की दुर्गन्ध का नाश होता है। पत्ते चबाने के बाद इसका रस थोड़ी देर मुंह में रखकर इधर-उधर घुमाते रहें, फिर थूक दें। पत्तों को उबालकर इसके पानी से कुल्ला और गरारा करने पर दांत का दर्द दूर होता है एवं मसूढ़ों की सूजन तथा पीड़ा नष्ट होती है।

शिशु सम्बन्धी रोग- जामफल के पत्तों को पीसकर उनकी लुगदी बनाकर बच्चों की गुदा के मुख पर रखकर बांधने से उनका गुदभरा यानि कांच निकलने का रोग ठीक होता है। बच्चों को पतले दस्त बार-बार लगते हों तो इसके कोमल तथा ताजे पत्तों एवं जड़ की छाल को उबालकर काढ़ा बना लें और दो-दो चम्मच

सुबह-शाम पिलायें। इससे पुराना अतिसार भी ठीक हो जाता है। इसके पत्तों का काढ़ा बनाकर पिलाने से उल्टी तथा दस्त होना बंद हो जाता है।

अमरूद के विटामिन- अमरूद में प्रति 100 ग्राम में 29 मिलीग्राम विटामिन-सी होता है। अमरूद के खाने से 66 कैलोरी ऊर्जा केवल 100 ग्राम मात्र में मिलती हैं। विटामिन-सी की अधिक मात्र होने के कारण अमरूद शीत ऋतु में अधिक शक्तिवर्द्धक होता है।

सूर्यावर्त- सुबह सूर्योदय से सिरदर्द शुरू हो, दोपहर में तीव्र पीड़ा हो एवं सूर्यास्त हो तब सिरदर्द मिट जाये। इस रोग को सूर्यावर्त कहते हैं। इस रोग में रोज सुबह पके हुए अमरूद खाने एवं कच्चे अमरूद को पत्थर पर पानी के साथ घिसकर ललाट पर लेप करने से लाभ होता है। दाह-जलन पके हुए अमरूद पर मिश्री भुरभुरा कर रोज सुबह एवं दोपहर में खाने से जलन कम होती है. यह प्रयोग वायु अथवा पित्तदोष से उत्पन्न शारीरिक दुर्बलता में लाभदायक है।

पागलपन एवं मानसिक उत्तेजना- अति क्रोध, पागलपन अथवा अतिविषयक वासना के रोग में भिगोये हुए तीन-चार पके अमरूद सुबह खाली पेट खाना लाभदायक है। दोपहर के समय भी भोजन के एक घंटे बाद अमरूद को खायें। इससे मस्तिष्क की उत्तेजना का शमन होता है एवं मानसिक शांति मिलती है।

स्वप्नदोष- कब्जियत अथवा शरीर की गरमी के कारण होने वाले स्वप्नदोष में सुबह और दोपहर अमरूद का सेवन करना लाभप्रद है।

खूनी दस्त (रक्तातिसार)- अमरूद के मुरब्बा का, पके हुए या कच्चे अमरूद की सब्जी का सेवन खूनी दस्त में लाभप्रद होता है।

मलेरिया ज्वर- तीसरे अथवा चौथे दिन आने वाले विषत ज्वर में प्रतिदिन नियम से सीमित मात्र में अमरूद का सेवन लाभदायक है।

अनमोल मोती- (5) परमात्मा में दृढ़ विश्वास का अर्थ है-निर्भयता। (6) चेहरे की मुस्कराहट और वाणी की मिठास बड़ो-बड़ो को मुग्ध कर देती है।

यही सीख सिखलाई

मुझको तो मेरे पुरखों ने यही सीख सिखलाई।
लाख लाभ ही बुरे काम से, हरदम बचना भाई।।
काया और माया का जग में झूठा है विश्वास।
कभी किसी बेबस, बेबस का मत करना उपहास।।
सेवा, सत्य, क्रोध पर काबू शुद्ध भाव से दान
महापुरुष के सीधे-सीधे ये है चार निशान
सुख-दुःख भला बुरा जो आए
सब साहस से सहना,
जिस हालत में रखे राम जी
उसमें ही खुश रहना।।

- **सुदेश सन्दूजा**, सैक्टर-9 ए बहादुरगढ़

हंसो हंसाओ

- **संजू**-भाई बीवी के मेकअप का खर्चा बर्दाश्त नहीं होता।
  बंटी-हाँ तो खर्चा देना बंद कर दे।
  संजू-लेकिन फिर मेकअप के बिना बीवी बर्दाश्त नहीं होती।
- **लड़की** से **लड़का** बोला-बेबी मुझे तुम्हारी आंखे में सारी दुनिया दिखाई देती है।
  पीछे से **एक बूढ़ा बोला**-हमारी गाय नहीं मिल रही दिखे तो बताना बेटा।
- **चंदू**-क्या तुम जानते हो कि संगीत में इतनी शक्ति होती है कि पानी गरम हो सकता है।
  मंदू-हाँ क्यों नहीं, जब तुम्हारा गाना सुनकर मेरा खून खोल सकता है पानी क्यों नहीं।
- **डॉक्टर मरीज** से-अगर तुम मेरी दवा से ठीक हो गये तो मुझे क्या इनाम दोगे?
  मरीज-डॉक्टर साहब मैं तो बहुत गरीब आदमी हूँ कब खोदता हूँ आपकी फ्री में खोद दूंगा।

- **डॉ रवि शास्त्री**
आत्म शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

आधुनिक संचार माध्यम-कुसंस्कार के स्त्रोत

-भगतराम शर्मा (जांगिड)

आज विश्व विभिन्न वैज्ञानिक अविष्कारों एवं संसाधनों की उपलब्धियों के फलस्वरूप प्रगति के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर है। इस तथाकथित प्रगति में आधुनिक संचार साधनों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। संचारक्रान्ति के इस युग में दूसरों से सम्पर्क करने की अनेक सुविधाएँ है जैसे- मोबाइल फोन, इंटरनेट, कम्प्यूटर, विडियो कॉल इत्यादि। इन संचार साधनों के कारण मनुष्य की जीवनशैली में व्यापक परिवर्तन हो रहे है। आज हमारे देश के युवा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रौघोगिक के क्षेत्र में नये-नये अविष्कार कर देश के लिए विदेशी मुद्रा का अर्जन कर रहे है। यह अकाट्य सत्य है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है और परिवर्तन होना मानव सभ्यता के लिए शुभ संकेत है। परन्तु जहाँ फूल होता है वहाँ काँटा भी होता है के अनुसार इन आधुनिक संचार साधनों ने राष्ट्र के बच्चों एवं युवाओं में सुसंस्कारों को प्रदूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

पिछले दिनों मैं पत्नी सहित अपने एक मित्र के घर उनका हालचाल जानने के लिए पहुँचा। मैं प्राय: एक दो महीने में नियमित रूप से उनकी कुशल क्षेम पूछ ने चला जाता हूँ। उनके दोनों बच्चे जो बड़े होनहार और संस्कारी है घर पहुंचते ही चरण स्पर्श करते हैं। मैंने घर के दरवाजे पर पहुंच कर घंटी बजाई। लगभग चार पांच मिनट तक प्रतिक्षा करने के बाद भी कोई जवाब नहीं आया तो मेरा माथा ठनका। कुछ देर बाद उनका छोटा बेटा आया उसके हाथ में मोबाइल था, जल्दी से नमस्ते कह कर अपने कमरे में चला गया। मैं सदा की भांति पत्नी सहित ड्राईंगरूप में बैठ गया, लगभग चार-पांच मिनट के बाद मित्र की पत्नी आई और कुशल क्षेम की शिष्टाचार के बाद बताया कि वह टी.वी. पर एक सीरियल देखने में व्यस्त थी उसके हावभाव से लग रहा था कि हमारे आने से उनके आनन्द में बाधा पड़ी है।

दूरदर्शन की पहुँच आज हमारे शयन कक्ष तक हो गई है। पाश्चात्य संस्कृति से ओतप्रोत अश्लील व कामुक कार्यक्रमों का प्रसारण आज हमारे शयनकक्ष में हमारी थाली में परोस कर पेश किया जा रहा है। जहां पर परिवार के सभी सदस्य इन दृश्यों को देखने के लिए विवश हैं एक समय था जब रात को सोने से पहले पूरा परिवार एकत्र होकर हास-परिहास करता था या दादा-दादी नाना-नानी बच्चों को भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत कहानियाँ सुनाकर बच्चों को सुसंस्कार से पोषित करती थी, वही आज दूरदर्शन के माध्यम से पाश्चात्य सभ्यता से ओत प्रोत अश्लील कार्यक्रम एवं सीरियल पूरा परिवार बैठ कर देखता है। इन सीरियल कार्यक्रमों में फूहड़पन, अश्लीलता, एक पुरुष के पत्नी के अतिरिक्त अन्य महिल से अवैध सम्बन्धों का प्रेषित किया जाता है जिसके फूल स्वरूप आज के नवयुवक, युवतियों के संस्कारों में प्रदूषण हो रहा है।

अत: प्रत्येक माता-पिता व संरक्षक का यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि अपनी सन्तान में, बचपन से ही सुसंस्कार स्थापना के प्रति सचेष्ट रहें। उसी के अनुसार घर व समाज का वातावरण बनाए। समय की आवश्यकतानुसार इन आधुनिक संचार संसाधन का समुचित सदुपयोग कर प्रगति के पथ अग्रसर रहे। अपने बच्चों पर निरन्तर सावधान रहें ताकि वे इन संचार माध्यमों का दुरुपयोग न करे। सरकार को भी चाहिए इंटरनेट, दूरदर्शन व स्मार्टफोन जैसे माध्यमों से प्रसारित कार्यक्रमों की अश्लीलता पर अंकुश लगाये। ताकि राष्ट्र की युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण की दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकें।

- सेवानिवृत अभियन्ता, सैक्टर-6,
बहादुरगढ़, मो. 9467818476

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। **-विक्रमदेव शास्त्री**

क्या दिक्कत है?

हीट को ताप कहने में।
यू को आप कहने में।
स्टीम को भाप कहने में।
फादर को बाप कहने में।
क्या दिक्कत है?
बेड को ख़राब कहने में।
वाईन को शराब कहने में।
बुक को किताब कहने में।
सॉक्स को जुराब कहने में।
क्या दिक्कत है?
डिच को खाई कहने में।
आंटी को ताई कहने में।
बर्बर को नाई कहने में।
कुक को हलवाई कहने में।
क्या दिक्कत है?
इनकम को आय कहने में।
जस्टिस को न्याय कहने में।
एडवाइज़ को राय कहने में।
मिल्कटी को चाय कहने में।
क्या दिक्कत है?
"फ्लैग को झंडा कहने में।
स्टिक को डंडा कहने में।
कोल्ड को ठंडा कहने में।
क्या दिक्कत है?
बीटिंग को कुटाई कहने में।
वॉशिंग को धुलाई कहने में।
पेंटिंग को पुताई कहने में।
वाइफ को लुगाई कहने में।
क्या दिक्कत है?
स्मॉल को छोटी कहने में।
फेट को मोटी कहने में।
टॉप को चोटी कहने में।
ब्रेड को रोटी कहने में।
क्या दिक्कत है?
ब्लैक को काला कहने में।
लॉक को ताला कहने में।
बाउल को प्याला कहने में।
जेवलीन को भाला कहने में।
क्या दिक्कत है?
गेट को द्वार कहने में।
ब्लो को वार कहने में।
लव को प्यार कहने में।
हॉर को छिनार कहने में।
क्या दिक्कत है?
लॉस को घाटा कहने में।
मील को आटा कहने में।
प्रोंग को काँटा कहने में।
स्लेप को चाँटा कहने में।
क्या दिक्कत है?
टीम को टोली कहने में।
रूम को खोली कहने में।
पैलेट को गोली कहने में।
ब्लाउज़ को चोली कहने में।
क्या दिक्कत है?
ब्रूम को झाड़ कहने में।
हिल को पहाड़ कहने में।
रॉअर को दहाड़ कहने में।
ट्रिक को जुगाड़ कहने में।
क्या दिक्कत है?
नाईट को रात कहने में।
कास्ट को जात कहने में।
टॉक को बात कहने में।
किक को लात कहने में।
क्या दिक्कत है?
सन को संतान कहने में।
ग्रेट को महान कहने में।
मेन को इंसान कहने में।
गॉड को भगवान कहने में।
क्या दिक्कत है?

- सोमवीर दहिया
अध्यापक कॉलोनी, बहादुरगढ़

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री राजपाल जी समाजसेवी, निठारी दिल्ली
2. श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी, लाजपत नगर, दिल्ली
3. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
4. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
5. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
6. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
7. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
8. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
9. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
10. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
11. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
12. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
13. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
14. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
15. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21 अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र.
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र.
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री मास्टर सन्तलाल जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
59. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
60. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
61. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
62. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
63. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
64. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
65. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
66. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
67. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
68. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
69. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
70. श्री रवि कुमार जी आर्य, एच.एल सिटी, बहादुरगढ़
71. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड़, बहादुरगढ़
72. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, डी-204, हेरिटेज मैक्स, सैक्टर-102, गुरुग्राम, हरियाणा
73. श्रीमती रीटा चड्डा, डी-204, हेरिटेज मैक्स, सैक्टर-102, गुरुग्राम, हरियाणा
74. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
75. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
76. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेवली, दि.

भारतीय संस्कृति के विनाश का पहला और बड़ा कारण-हमारी अंधश्रद्धा

- डॉ. रेखा शास्त्री

आज के वैज्ञानिक युग में, आधुनिकता के जमाने में हमें उन्नत देशों की भांति नए-नए अविष्कार कर हर प्रकार के साधनों से परिपूर्ण होने के अवसर मिले हैं। परन्तु ऐसा क्या कारण है जिससे हम प्राचीन काल के स्वर्णिम भारत के समान उन्नत न होकर केवल प्रगतिशील अर्थात् उन्नति के पथ पर अग्रसर का नामकरण लिए हुए है जबकि भारत का प्राचीन समय में जब आर्यावर्त के नाम से प्रसिद्ध था तब पहले पुरातन काल में चक्रवर्ती राज्य कहलाता था ऐसा क्या हो गया, हमसे क्या खो गया कि हमारा प्यारा भारतवर्ष आज पिछड़े देशों में गिना जाने लगा है इस सबका वास्तविक कारण था वेद एवं वेदज्ञान का लुप्त प्राय: हो जाना। प्राचीन समय में आर्यावर्त की उन्नति का सबसे बड़ा कारण हमारे लोगों का वेदानुसार आचरण था। लेकिन पोपलीला के कारण जब पुराणों का प्रकाश हुआ तब सबकुछ विकृत हो गया । लोगों के आचरण धीरे-2 क्षीण होते गए और ईश्वरोपासना के स्थान पर मूर्ति-पूजा, श्राद्ध, मृत्यु-भोज, केदारनाथ, बद्रीनाथ आदि चार धाम की यात्रा, देवी जागरण, भूत-प्रेत व झाड़-फूंक, गंगा स्नान, कावड़, बलि प्रथा, सती प्रथा, राधा कृष्ण का प्रेम प्रसंग (रासलीला) फलित ज्योतिष आदि-आदि (इतने विषय है कि गिनाना कठिन होगा) का प्रचार वेदों के नाम पर होने लगा। पुराणों ने हमारे इतिहास को, हमारी सामाजिक व्यवस्था को विकृत कर दिया हैं वेदों से जहाँ हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें सदैव सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने को उद्यत रहना चाहिए वहीं पुराण इसके विपरीत है पौराणिक पाखण्डियों के अनुसार जो भी उनमें लिखा है जैसा लिखा है वैसा मान लेना चाहिए विचार-विरोध न करना चाहिए। वेद का नाम लेकर ऋषियों का नाम लेकर, श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं महात्मा शिव आदि महापुरुषों का नाम लेकर जो पाखण्ड इन पंडों ने फैलाया है उसका तो क्या कहें सारे के सारे विनाश की जड़ ही यही है। आदर्शवादी मर्यादा पुरुषोत्तम राम पूजनीय हैं। उनके सत्कार्यों के अनुरूप ही उन्हें भगवान की उपाधि मिली लेकिन आज उनकी मूर्ति बनाकर उनके आचरण को, उनके चरित्र को आदर्श (अनुकरणीय) ना मानकर, उनके चित्र की पूजा प्रारम्भ कर दी। श्रीराम ने वेदादि ग्रन्थों का अध्ययन किया, यज्ञ किए तथा कराए क्या हम करते हैं? क्या इन पंडितों ने श्री राम के ही अनुरूप वेदादि शास्त्रों को पढ़ा है? नहीं। क्योंकि यदि स्वयं पढ़ा होता व क्षत्रियों को पढ़ाया होता वैसा ही आचरण करते तो ढोंग और पाखण्ड का जो बोल-बाला चारों ओर आज दीख पड़ता है वह कदापि नहीं होता? वरन् जिस प्रकार राम राज्य था उसी प्रकार हमारा देश आज भी उन्नति करता और विश्वगुरू की पद्वी पर ही रहता। हम पाश्चत्य मात्र भौतिकता का अंधानुकरण न कर अपने देश की सभ्यता व संस्कृति की गौरव गरिमा को और ऊँचा उठाते। क्या जिस प्रकार इन पाखंडियों ने, पेटार्थी पोपों ने श्री कृष्ण के चरित्र को उछाला है उसी प्रकार आपके सुपुत्र के चरित्र को कोई उछाले तो आप चुप रहेंगे? कहते हैं गृहस्थ में रहते. हुए श्री कृष्ण जैसा ब्रह्मचारी संसार में अभी तक दूसरा नहीं हुआ, उन्होंने विवाह को व्यभिचार का अढडा न बनाकर रुक्मणी के साथ तपस्या की थी, 12 वर्ष तक दोनों ने वेदादि का अध्ययन और कड़ी साधना के पश्चात् एक बार पुत्र प्राप्ति की शुभेच्छा से सहवास किया था तत्पश्चात् आजीवन ब्रह्मचारी रहें दोनों। क्या आज है किसी पंडे में इतना दम? ये तो केवल ब्रह्मचारी और योगी को व्याभिचारी व भोगी बना सकते हैं मात्र अपनी विलासिता के लिए। मैं पाठकों से प्रश्न करती हूँ, उन माताओं, बहनों व भाईयों से प्रश्न करती हूँ कि आजकल के पंडितों द्वारा मंदिरों में जिस किस्म के कृष्ण का बखान किया जाता है उस किस्म के लडके से क्या वे अपनी बेटी का विवाह कर सकते हैं? मैं तो ऐसा कदापि नहीं कर सकती तो सोचिए जरा विचार करिए आप क्या कर रहे हैं? अपने बुद्धि के पट्ट खोलिए और आज ही अपने घर में से बांसुरी वाले और राधा-कृष्ण के साथ वाले चित्रों और मूर्तियों को तोड़-फोड़कर बाहर फेंक दें जैसा कि महर्षि दयानंद के समय में हुआ था और महाभारत में बताए गए

असली सुदर्शन चक्रधारी, राष्ट्रवादी और योगीराज श्री कृष्ण के उस चित्र को लगाएं जिसमें स्वयं अर्जुन का सारथी बनकर राष्ट्रविरोधी और पापी शासकों को परास्त किया था।

महाभारत के पश्चात् वेद विद्या की क्षीणता के कारण, गुरूकुल आश्रम भी कम होते गए। आश्रम व वर्ण व्यवस्था विकृत हो गई। वर्ण व्यवस्था प्राचीन काल में कर्म पर आधारित थी अब जन्म पर आधारित हो गई वेदों को ना पढ़ने वाले भी स्वयं को चतुर्वेदी, द्विवेदी आदि-आदि ब्राह्मण कहलाने लगे और वेदों का पठन-पाठन छूट जाने से लोग वेद ज्ञान से शून्य होते चले गए और अब तो आलम ये है कि न संस्कारों का ज्ञान रहा, न संस्कृत भाषा का। प्राचीन समय में तो हमारी सामान्य बोलचाल की भाषा ही संस्कृत हुआ करती थी। संस्कृत का ज्ञान ना होने से उनके मनमाने अर्थों को मानना पड़ा। अज्ञानतावश हम अंधश्रद्धा, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, भूत-प्रेत आदि के जाल में फंस कर दुखी रहने लगे। हमारी आर्थिक स्थिति जर्जर होती गयी और ये पाखण्डी 'कमाएगी दुनिया खाएंगे हम' की सोच रखते हुए लोगों की मानसिक कमजोरी (अभिशाप और वरदान के चक्कर में फंसे हुए) का लाभ उठाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार कर आज मीडिया तक पहुँच गए। और समस्त देश को ही नहीं विदेशों में भी रहने वाले हमारे भाई-बहनों को राम कृष्ण द्वारा अपनाई गई जीवन शैली से विमुख कर रहे हैं। ये अपने को श्री कृष्ण का, श्री राम का भक्त कहने लगे। क्या इन पाखण्डियों को गुरू शब्द का वास्तविक अर्थ पता है? 'गुरू' का वास्तविक अर्थ होता है सद्ज्ञान की ओर प्रेरित करने वाला अर्थात् सत्य से हमें परिचित कराने वाला लेकिन इनके किस्से कहानी तो भगवान राम और कृष्ण के चरित्र एवं महात्मा शिव के चरित्र का जो ये झूठा दर्शन कराते हैं वहीं समाप्त हो जाते हैं। मेरा यह मानना है यदि आपको अपनी बुद्धि की कसौटी पर खरी लगे तो धारण कर लेना। ये पाखण्डी पोप और पंडे व गुरू कहते हैं कि श्री कृष्ण और राम एवं महात्मा शिव, हनुमान, विष्णु, ब्रह्मा, महेश आदि ये ईश्वर के अवतार हैं, भगवान हैं। भगवान तो मैं भी मान लेती हूँ लेकिन सृष्टि रचयिता ईश्वर नहीं। क्योंकि इन्होंने अपने जीवन काल में अनेक अच्छे कार्य नि:स्वार्थ भाव से किए और प्राचीन काल में अच्छे कार्यो को करने वाले व्यक्तियों को भगवान की संज्ञा दी जाती थी लेकिन इन्हें केवल ईश्वर का अवतार कहे तो ऐसा कहना गलत होगा क्योंकि अवतार कहते है 'अवतरण' को जो हम सभी का संसार में हुआ है और भूमि, गगन, वायु, अग्नि, नीर इन पांचो तत्वों से हमारा शरीर बना है इन भगवानों का भी इन्हीं तत्वों से बना है और ईश्वर ने हम सभी को किसी ना किसी उद्देश्य से ही संसार में भेजा है। अच्छा मुझे एक बात बताओ कि क्या ईश्वर कण-कण में नहीं समाया है? समाया है ना, हाँ समाया है तो मूर्ति में भी तो है, हाँ है मैं भी मानती हूँ लेकिन जब परमात्मा या ईश्वर कण-कण में समाया है सारी सृष्टि में उसका वास है तो फिर हम केवल मूर्ति पूजा क्यों करें मन्दिर में ही क्यों जाए, चढ़ावा चढ़ाए हमें तो अपने घर में पड़ी हुई प्रत्येक वस्तु की पूजा अर्चना करनी चाहिए यहाँ तक कि चप्पल जूते आदि की भी उसमें भी तो ईश्वर है। टायलट इत्यादि की सीट, ब्रश, झाड़ू आदि की उनमें भी तो ईश्वर है क्योंकि कण-कण में है तो उनमें भी तो है फिर मन्दिर ही क्यों, वहां भी चढ़ावा चढ़ा सकते है आखिर तो मन्दिर में भी हम अपनी मानसिक गन्दगी का पश्चाताप मूर्तियों रूपी भगवान के समक्ष करते है यहां तो शारीरिक गन्दगी भी साफ हो रही हैं क्यों नहीं कर सकते बताओ जरा, क्या फर्क पड़ता है भला एक पंथ दो काज हो जाएगे। शरीर की तो गन्दगी साफ हो ही रहीं है, मन की भी कर लेंगे। अच्छा हम कहते है ना कि बच्चे तो भगवान का रूप होते है तो क्या हम बच्चों को भगवान मानकर उनकी पूजा करते है? क्या उनको भगवान मानकर उन्हें शिक्षा-दीक्षा देना बंद कर देते है? नहीं। बस यहीं तो समझना है भगवान तो कण-कण में बसा है चाहे जड़ हो या चेतन लेकिन उसकी प्राप्ति मन्दिर में नहीं होगी। वह हमें किसी पत्थर जूते चप्पल या वस्तु में नहीं मिलेगा वहीं मिलेगा जहां हम भी हैं। और हम कहां रहते है, हमने कभी जानने का प्रयास ही नहीं किया। हम का मतलब यहां हमारे शरीर से नहीं वरन् हमारी आत्मा से है क्योंकि हमारा शरीर भी तो जड़ है और इसी जड़वत् शरीर रूपी वृक्ष पर हृदय रूपी स्थान में आत्मा और परमात्मा रूपी दो पक्षी एक वृक्ष के फलों को भोग रहा, दूसरा देख रहा है, तो कहां मिलेगा वहां जहां हम है। हमारा मन तो सदा बहिर्मुखी होता है

क्योंकि अन्तर्साधना तो कभी की नहीं, केवल बाहरी दिखावे में रहें, मन्दिरों में स्थापित मूर्ति को ही भगवान या ईश्वर समझकर साधना करते रहे। याद रखना हमारी (आत्मा) और परमात्मा के बीच केवल ज्ञान की दूरी है, स्थान की नहीं। हम पाखण्डियों के बहकावे में आकर नाना (काशी, हरिद्वार, बद्रीनाथ, काबा आदि) स्थानों में जाकर भगवान को ढूंढते है सो गलत है। लेकिन यदि देश अथवा स्थान की दूरी होती तो हम परमात्मा को सर्वत्र व्यापक नहीं कह सकते थे क्योंकि परमात्मा तो बद्रीनाथ में भी है यहां हमारे अन्दर भी तो स्थान या देश की तो दूरी नहीं है और न ही काल की दूरी है क्योंकि मंदिर रात को बंद हो जाते है, ताले लग जाते है मन्दिरों के, तो क्या हमें रात में भगवान से प्रार्थना करनी हो, भगवान के दर्शन करने हो तो क्या हम मन्दिर में ताले खुलवाते है? नहीं, हम आँखे बंद करके अपने मन-मन में प्रार्थना करते है सुबह तक ताले खुलने का इंतजार नहीं करते क्योंकि असलियत अर्थात् सच्चाई हमें भी पता है कि भगवान हमारे भीतर ही है हम उससे कभी भी किसी भी पल प्रार्थना, उपासना कर सकते है। अब केवल और केवल ज्ञान की दूरी हमारे बीच रूकावट है ज्ञान की दूरी तभी दूर हो सकती है जब हम अपने अंदर छिपे अज्ञान को मिटा देंगे! अज्ञान कहते है असत्य विद्या को और जो सत्य विद्या है अर्थात् जो वस्तु जैसी हो उसको वैसा ही मानना और कहना सत्य है, वहीं सद्ज्ञान है। वही सत्यज्ञान हमें धारण करने में सदैव उद्यत रहना चाहिए और असत्य विद्या को छोड़ने में भी सदैव तत्पर रहना चाहिए। यही महर्षि स्वामी दयानन्द का मन्तव्य है कि आप जो पौराणिकता के पाखण्ड के जाल में फंसे है उसे त्यागकर सच्चे ईश्वर को जाने और फिर माने, अंधानुकरण न करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती उच्च ब्राह्मण कुल में जन्में थे उन्हें क्या पड़ी थी कि किसी को सत्य बताए, वे भी अन्य पाखण्डियों पण्ड़ो की भाँति खूब पेट भरते और विवाह कर गृहस्थी बनते, पाँच-सात बच्चे पैदा कर उनके लिए धन वैभव जोड़ लेते लेकिन नहीं उन्होंने अपने जीवन में सत्य की खोज की, सच्चे ईश्वर को जाना और हमें सत्य सनातन वेद ज्ञान की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया जो सत्य को ग्रहण कर लेता है फिर उसके समक्ष कितनी भी बड़ी विपत्तियाँ आ जाए बड़े से बड़े दुःख को सहजता से झेल जाता है उफ तक नहीं करता। तो आईए इस अपने अंदर पनप रहें अंधविश्वास की जड़ो को उखाड़ने का प्रयास करे जब तक आप निम्न बातों पर विचार नहीं करोगे तब तक आपका अंधविश्वास नहीं टूटेगा जड़े गहरी होती जाएंगी, आप जैसे अनेक पौराणिक लोग जो पण्डितों और गुरूओं के बहकावे में है वें कहते है मूर्ति पूजा के प्रति हमारी श्रद्धा है एक कहावत भी है 'मानो तो देव नहीं तो पत्थर' लेकिन जो जैसा है उसको वैसा ही मानना बुद्धिमानों का काम है तो पत्थर को पत्थर ही मानना चाहिए देव नहीं । क्या श्रद्धा से अथवा मानने से भगवान मिलते है, क्या? जिसमें श्रद्धा कर लो वही भगवान है? ऐसा विचार करना हमारी भूल है तो विचार कीजिए निम्न बातों पर:-

क्या तेजाब को जल मान लेने से तेजाब जल बन जायेगा? क्या गोबर को खीर समझने की श्रद्धा करे तो गोबर खीर बन जाएगा? क्या कलम में बंदूक की श्रद्धा करे तो कलम बंदूक बन जाएगी? क्या बजरी को चीनी समझने की श्रद्धा करे तो बजरी चीनी बन जाएगी? क्या मदिरा अर्थात् शराब में दूध की श्रद्धा करे तो शराब दूध बन जाएगा? शेर को गीदड़ समझकर उसके सामने जाओ, क्या शेर गीदड़ बन जाएगा और छोड़ देगा? यदि हम बल्ब को अज्ञानता वश या अपनी आस्था या श्रद्धा मानकर सूर्य समझने लगे तो क्या वह सूरज बन जाएगा? ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्या कागज के फूलों से कभी सुगंध आती है? क्या बिल्ली नकली चूहे पर झपटती है ? यदि मांस खाना ही श्रद्धा है तो अपने बच्चे का मांस खाएंगे आप? यदि बलि चढ़ाना ही आपकी श्रद्धा है तो क्या अपने किसी प्रियजन की बली चढ़ाना पसंद करेंगे? सृष्टि कभी मानव के हाथों से बन नहीं सकती, यदि बन सकती तो किसी को भी अंधी, लंगडी या मृत संतान नहीं होती। शराबी या मांसाहारी अपनी भावना अर्थात् श्रद्धा व आस्था के कारण ही तो मांस खाता या शराब पीता है, तो क्या उसकी यह भावना एवं आस्था उचित एवं अनुकरणीय है? उज्जैन के काल भैरव मन्दिर में सर्वदा चढ़ावे के रूप में शराब की बोतले अर्पित की जाती है। कहीं-कहीं तो मांस भी अर्पित किया जाता है क्या ये ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा है? अपनी आस्था व श्रद्धा के कारण अनेक बाँझ स्त्रियाँ पाखण्डियों पर अंधविश्वास कर दूसरों के बच्चों की बलि कर देती है क्या ये उनकी

आस्था, उनका अंधविश्वास सही है?

क्या भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है उसका एक बहुत बड़ा कारण हमारी अन्धश्रद्धा, हमारी गलत आस्था व भावना नहीं है? सोचिए जरा। केवल और केवल एक अकेली मूर्ति पूजा में अपनी श्रद्धा का परिणाम देखिए। वेदों में स्पष्ट है 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' अर्थात् उस ईश्वर की कोई प्रतिमा या मूर्ति ही नहीं है। पहले यज्ञशालाएँ होती थी। लगभग 2600 वर्ष पहले मूर्ति पूजा का आरम्भ हुआ, मन्दिर बने, उनमें यज्ञवेदियों के स्थान पर सोना, चाँदी, कांस्य व अन्य धातुओं की मूर्तियों की स्थापना की नई. मन्दिरों में चढ़ावे के स्वरूप हीरे, मोती, रत्न, माणिक्य, पन्ना, पुखराज आदि आने लगे। कालान्तर में जब विदेशियों को पता चला तो उन्होंने आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिए। लोगों का रक्त बहाया। स्त्रियों की अस्मिता लूटी गई। मोहम्मद बिन कासिम, सुबुक्तगीन, गजनबी, तैमूरलंग, गौरी, बाबर आदि ने यहाँ लगभग 600, 700 वर्षों तक खून की नदिया बहाई, लाखों मन्दिरों, महलों को धवस्त किया। गुरूकुलों, आश्रमों व विद्यालयों को नष्ट किया। यह सब उन मन्दिरों में अथाह धन सम्पत्ति के कारण हुआ। आज भी इसका उदाहरण पद्मनाभ का मन्दिर जो दक्षिण भारत में विद्यमान है, एक लाख करोड़ रूपये के लगभग उसमें हीरे मोती स्वर्ण आदि है। ऐसे ही जब सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा गया तो सन् 1001 में उसमें सैतालिस सौ करोड़ रूपये के हीरे, जवाहरात व आभूषण मिले थे। आज उनका मूल्य क्या होगा। ये सब मूर्तिपूजा में श्रद्धा के कारण ही तो है।

इसी अविद्या के कारण सिन्ध के राजा की हार हुई। वह अत्यन्त साहसी एवं बलवान योद्धा था उसने कभी हार नहीं मानी बस मोहम्मद बिन कासिम और मन्दिर के पुजारी की मिलिभगत से अन्धविश्वास का आश्रय लेकर ही हार हुई। मन्दिर के पुजारी ने दाहिर की सेना में भ्रान्ति फैला रखी थी कि जिस दिन मंदिर का ध्वज झुक जाएगा उस दिन सेना हार जाएगी। अन्यथा सेना को हराना टेढ़ी खीर है। कासिम को जब यह बात पता चली तो वह ब्राह्मण का वेश धारण कर सिंध के उस मन्दिर पर आ गया और पुजारी से युद्ध के समय झंडा झुका देने और जीतने पर आधा राज्य पारितोषिक स्वरूप देने को कहा। इस छल के कारण सिंध के राजा दाहिर की पराज्य हुई थी। झंडा झुका देने से सेना का मनोबल अंध विश्वास के कारण टूट गया। दाहिर अकेला पड़ गया यह सब अवैदिक ज्ञान व अन्धविश्वास के कारण ही तो हुआ। आखिर अपने हृदय से पूछे क्या मूर्ति पूजा परमात्मा को पाने के लिए की जाती है? सत्य तो यह है कि परमात्मा को साकार वस्तुओं के माध्यम से नही पाया जा सकता। मूर्तियों से तो भगवान का बनाया हुआ मनुष्य, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि का साकार रूप अच्छा जिनको देखकर मन स्थिर किया जा सकता है पर ऐसा नहीं होता। हर रोज हमारा मन इन साकारों को देखकर भी चचंल होता है, कलुषित होता है तो स्पष्ट है मन को, बुद्धि को, हृदय को साकार की आवश्यकता नही जरा सोचिए जब मन्दिर के भगवान को साकार रूप दे ही दिया तो पूजा अर्चना के समय आंखे बन्द करके क्यों बैठते है? टकटकी लगाकर निरन्तर उसे देखते क्यों नहीं?

प्रिय पाठको! मूर्ति पूजन करने वाला मन्दिर में स्थित मूर्ति से मन्दिर में थोड़ा भय खाएगा अन्यत्र स्थान पर नहीं क्योंकि उसके लिए तो भगवान मन्दिर में ही रहता है परिणाम स्वरूप एकान्त पाकर खूब कुकर्म करेगा क्योंकि वह जानता है कि परमात्मा तो मन्दिर में है मुझे देख नहीं रहा। मूर्ति पूजक तो नास्तिक है, आस्तिक तो परमात्मा को कण-कण में मानने वाला है। अत: वह पाप कर्मों से स्वयं को बचा लेता है। अत: पाठको से निवेदन है मेरी बात को अन्यथा ना लेकर अपने भीतर के ईश्वर को जानो, तथा बाहरी दिखावा बन्द करो, मेरा मूर्ति पूजा के खण्डन का प्रयोजन किसी भी प्रकार से किसी के मन को दुखाना नहीं अपितु सत्य ज्ञान की ओर प्रेरित करना है यदि उपरोक्त लेख के माध्यम से आपके अंदर सच्चे ईश्वर के प्रति थोडी सी भी सच्ची श्रद्धा उत्पन्न होकर आप इस अन्धकूप से निकलने का प्रयास करेगें तो मैं अपनी इस लेखनी को सार्थक समझूंगी।

(प्रेरक डॉ. गंगा शरण आर्य, डी.एन.वाई. एवं मास्टर कॉस्मिक एनर्जी हीलर)

जनहित में - डॉ. रेखा शास्त्री (डी.एन.वाई.) (गोल्ड मैडलिस्ट) एवं एन.डी.डी.वाई. व कॉस्मिक एनर्जी हीलर चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला गांव-शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61
मो: 9910334655

महर्षि दयानन्द और उनका सत्यार्थप्रकाश

-डॉ. जगदेव विद्यालंकार

अपनी किशोरावस्था में चौदह वर्ष की आयु में बालक मूलशंकर ने महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर पिता के आदेश की अनुपालना करते हुए शिवजी का व्रत किया और चूहों से अपनी रक्षा करने में असमर्थ शिवलिंग को देखकर सच्चे शिव को पाने का दृढ़ संकल्प किया और तब मूलशंकर के मन में एक आन्दोलन ने जन्म ले लिया। लगभग सात वर्ष तक जिज्ञासा की प्रबल तरंगे उठती रही। इक्कीस वर्ष की अवस्था में वैराग्य के परिपक्व होने पर गृह त्याग कर दिया। गृहत्याग के उपरानत एक ब्रह्मचारी के परामर्श से मूलशंकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य बन गये और कुछ काल पश्चात् दण्डी स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा लेकर दयानन्द सरस्वती बन गये। ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य की इस यात्रा में स्वामी योगानन्द, जवालानन्द पुरी और शिवानन्द गिरि से भेंट हुई और उनसे योगसाधना की विशेष शिक्षा प्राप्त हुई। परन्तु अभी दयानन्द की जिज्ञासा का पूर्ण शमन नहीं हुआ था, तथापि स्वामी विरजानन्द दण्डी के पास पहुंचने से पहले स्वामी दयानन्द ने योगसाधना का पर्याप्त अभ्यास कर लिया था और मोक्षप्राप्ति की दिशा में अग्रसर थे। अन्य योगियों की भांति वे भी अपने लक्ष्य तक पहुंच जाते परन्तु मेरे मन कछु और है साई के कछु और' इस कहावत के अनुसार गुरु विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त दयानन्द के जीवन के लक्ष्य की दिशा ही बदल गई। गुरुदक्षिणा में गुरु विरजानन्द दण्डी ने दयानन्द का जीवन ही मांग लिया और आदेश दिया-हे दयानन्द आज देश में अज्ञान-अन्धकार, ढोंग, पाखंड और आडम्बर का ही चहुँ ओर बोलबाला है, अत: वेद-ज्ञान का प्रचार करके अज्ञानजन्य समसत कुरीतियों का उच्छेद करके मानवता का कल्याण करो। दयानन्द ने गुरु जी को तथास्तु कहकर कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया।

कार्यक्षेत्र में उतर कर महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक इन सभी क्षेत्र में सुधार की महती आवश्यकता है, अत: सर्वांगीण सुधार का बीड़ा उठाया और सचमुच दयानन्द ने अपनी वाणी और लेखनी के माध्यम से जो प्रभूत कार्य किया उसे एक पूर्ण संस्था भी कर पाने में समर्थ नहीं है। उन्होंने प्रवचनों के द्वारा संवादों के द्वारा शास्त्रार्थों के द्वारा, पत्रों के द्वारा और ग्रन्थ लेखन के द्वारा सुधार कार्यों की झड़ी लगा दी और सुधार कार्यों को करते-करते जीवन का ही बलिदान दे दिया।

अपने स्वल्य जीवन में महर्षि दयानन्द ने छोटे-बड़े लगभग चालीस ग्रन्थों की रचना की। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है, जिसका अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और सैकड़ों से भी अधिक संस्करण निकल चुके हैं। इस अमर ग्रन्थ की लोकप्रियता इतनी बढ़ गई थी कि प्रथम संस्करण के मुद्रण से पूर्व ही 120 पृष्ठों को एक-एक रूपये में बेचना पड़ा। दूसरे संस्करण की भी यही दशा हुई। प्रथम संस्करण 1875 में और दूसरा संस्करण 1882 में तैयार हुआ। महर्षि ने प्रथम संस्करण में कुछ संशोधन करके दूसरा संस्कारण प्रकाशित करवाया था। दूसरे संस्कारण की भूमिका के प्रारंभ में वे स्वयं लिखते हैं-"जिस समय मैंने यह ग्रन्थ 'सत्यार्थ पकाश' बनाया था, उस समय और उससे पूर्व संस्कृत भाषण करने, पठनपाठन में संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण से मुझको इस भाषा का विशेष परिज्ञान न था, इससे भाषा अशुद्ध बन गई थी। अब भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास हो गया है। इसलिए इस ग्रन्थ को भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है। कहीं-कहीं शब्द, वाक्य रचना का भेद हुआ है सो करना उचित था, क्योंकि इसके भेद किए बिना भाषा की परिपाटी सुधरनी कठिन थी, परन्तु अर्थ का भेद नहीं किया गया है, प्रत्युत विशेष तो लिखा गया है। हां जो प्रथम छपने में कहीं-कहीं भूल रही थी, वह वह निकाल शोधकर ठीक-ठीक कर दी गई है।"

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है-सत्य अर्थ का प्रकाश करना ही इस ग्रन्थ का उद्देश्य है। महर्षि स्वयं ही लिखते है-"मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य

प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या प्रतिपादित करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है।

सत्यार्थ प्रकाश में कुल चौदह समुल्लास है। पूर्वाद्ध में दस और उत्तरार्द्ध में चार समुल्लास है। पूर्वाद्ध में मानव-जीवन से सम्बन्धित विविध विषयों का वर्णन है और उत्तरार्द्ध में भारत और भारत के बहार प्रचलित मत ग्रन्थ और सम्प्रदायों का चित्रण किया है। महर्षि दयानन्द के समय में और आज भी दुनिया के अधिकतर मनुष्य ईश्वर और धर्म के स्वरूप के विषय में सर्वाधिक भ्रमित हैं, अत: महर्षि ने **प्रथम समुल्लास** में बताया कि ओ३म् ईश्वर का मुख्य और निज नाम है, शेष सभी नाम गुणवाची हैं, ऐसे सौ नामों की व्याकरण और निरूक्तादि के द्वारा युत्पत्ति करके उनकी व्याख्या की गई है। जिससे ईश्वर का स्वरूप और लक्षण भी स्वत: स्पष्ट हो जाता है। **दूसरे समुल्लास** में सन्तान निर्माण का उपदेश दिया गया है। शतपथ ब्राह्मण का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए लिखा-**'मातृमान् पितृमान् आचार्य पुरुषो वेद'**। अर्थात् माता, पिता और आचार्य इन तीन उत्तम शिक्षको से ही मनुष्य ज्ञानवान् होता है। माता सन्तान की सबसे पहली और सबसे बड़ी गुरु होती है। माता से ही बालक भाषा और सर्वाधिक ज्ञान सीखता है। **''प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्''** धन्य है वह माता जो की गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करें। दूसरा गुरु पिता होता हैं। पिता का भी दायित्व होता है कि वह सन्तान पर निरन्तर दृष्टि रखे और उसे कुपथ से हटाकर सत्पथ हेतु प्रेरित करे। तीसरा गुरु आचार्य होता है जो पूर्ण विवेक के साथ शिष्य को सन्तानवत् मानते हुए सुशिक्षा के द्वारा सुयोग्य और श्रेष्ठ मानव बनावे। श्रेष्ठ मानव के निर्माण हेतु तीनों गुरुओं को स्वयं सुशिक्षित, सुयोग्य और सच्चारित्र होना आवश्यक है।

तृतीय समुल्लास में ब्रह्मचर्य की शिक्षा, अध्ययन, अध्यापन विधि, सत्य-असत्य ग्रन्थों का परिचय तथा पठन-पाठन की उत्तम रीति पर दृष्टिपात किया है। अनार्षग्रन्थों का निषेध और आर्ष पाठ विधि का प्रबल समर्थन करते हुए उसके महत्त्व को प्रदर्शित किया-''अनार्ष ग्रन्थों को पढ़ना तो पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना है तथा आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों को पाना। शिक्षा की अनिवार्यता के विषय में महर्षि के जो प्रगतिशील विचार थे वैसे तो अपने को आधुनिक कहने वाली आज की सरकारों के भी नहीं हे। वे लिखते हैं-''इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवे तथा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे वह दण्डनीय हो।'' स्पष्ट है महर्षि दयानन्द शत प्रतिशत शिक्षा और साक्षरता के पक्षधर थे।

चतुर्थ समुल्लास में विवाह और गृहाश्रम की व्यवहार विद्या पर प्रकाश डाला है। आठ प्रकार के विवाहों का संकेत करते हुए केवल ब्राह्म विवाह को ही उत्कृष्ट मानते है। ''वर कन्या दोनों यथावत-ब्रह्मचर्य से पूर्व विद्वान धार्मिक और सुशील हो उनका परस्पर प्रसन्नता से विवाह होना 'ब्रह्म' कहाता है।''

गृहस्थाश्रम को सभी आश्रमों का आधार बताते हुए मनुस्मृति का श्लोक उद्धृत किया-**''यथा नदीनदा सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्। तथैवाश्रमिण: सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्कितिम्॥''** मनु.

अर्थात् जैसे नदी और बड़े-बड़े नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते, वैसे गृहस्थ के आश्रम से सब आश्रम स्थिर रहते हैं।

पांचवें समुल्लास में वानप्रस्थ और संन्यासश्रम की विधि का वर्णन किया है। गृहस्थाश्रम का उत्तरदायित्व पूर्ण होने के पश्चात् अथवा पुत्र को पुत्र प्राप्ति होने के उपरान्त वानप्रस्थधारण करके तप और त्याग के द्वारा स्वयं को संन्यास के योग्य बनाना है और उसके बाद संन्यास ग्रहण करके वेदोपदेश के द्वारा संसार का कल्याण करना है। **छठे समुल्लास** में राजनीति की विस्तृत चर्चा की गई है। राजा और प्रजा के कर्तव्यों का विशद परिचय दिया है। वैदिक समाजवाद का निर्देश दिया गया है जिसके द्वारा स्वर्ग सदृश सुशासन की स्थापना की जा सकती है।

सातवें आठवे और नौवें समुल्लास में गूढ़ विषय उठाये गए है। सातवें में वेद और ईश्वर विषय

की दार्शनिक व्याख्या की गई है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, जो ईश्वर प्रदत ज्ञान है और जो हर सृष्टि से पहले अग्नि-वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों के पवित्र हृदय में क्रमशः ऋगृ यजु साम और अथर्व का ज्ञान प्रकट किया जाता हैं। ईश्वर के शुद्ध स्वरूप को बतलाया गया है। आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्य स्वरूप को स्पष्ट कर दिया गया है-"**ईश्वर सच्चिदानस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य-पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।**" संसार के मनुष्य इस बात को समझ जाएं तो सबकी उपासना शुद्ध हो सकती है तथा मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर और गुरुदयानन्द के सभी विवाद समाप्त हो सकते हैं और पूरी दुनिया में सुख-शान्ति स्थापित हो सकती है।

आठवें समुल्लास में सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय का वर्णन किया है। मुख्य रूप से ईश्वर के पांच कार्य है-सृष्टि को उत्पन्न पालन करना और समय आने पर संहार कर देना, चौथ कार्य है सृष्टि के आरम्भ में वेद का ज्ञान प्रदान करना, पांचवा कार्य है जो मनुष्य जैसा कार्य करे उसको वैसा ही फल दे देनां ईश्वर सृष्टि का निमित्त कारण और मूल प्रकृति सृष्टि की उपादान कारण है।

नौवें समुल्लास में विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष का परिचय दिया गया है। योगदर्शन के सूत्र के द्वारा अविद्या की परिभाषा की है-"**अनित्याशुचि दुःखानात्मसु नित्य शुचिसुखात्मख्यातिर विद्याा**"॥ अर्थात् जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्य जगत् देखा सुना जाता है सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है वैसी विपरीत बुद्धि होना, अविद्या का प्रथम भाग है दूसरा अशुचि अर्थात् मलमय स्त्रयादि के शरीर और मिथ्या भाषण चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि, दूसरा अत्यन्त विषय सेवन रूप दुःख में सुख-बुद्धि आदि। तीसरा अनात्मा में आत्मबुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग है। यह चार प्रकार विपरीत ज्ञान अविद्या कहाती है। इसके विपरीत विद्या है।

जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन, जैसे जन्म के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद जन्म, जैसे सृष्टि के बाद प्रलभ और प्रलभ के बाद सृष्टि वैसे ही बन्ध के बाद मोक्ष और मोक्ष के बाद बन्ध यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। मुक्ति में स्थूल शरीर न होने के कारण जीव को कोई दुःख नहीं सताता। सूक्ष्म शरीर में पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच सूक्ष्मों भूत, मन तथा बुद्धि ये सत्तरह तत्त्व होते हैं, जो जन्ममरण आदि में भी जीव के साथ रहते हैं। इस सूक्ष्म शरीर के दो भेद हैं-एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशो से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीवन स्वाभाविक गुणरूप हैं। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता हैं। यहां मुक्ति के साधन और उपाय आदि की विस्तृत चर्चा की है।

दसवें समुल्लास में आचार, अनाचार तथा भक्ष्य अभक्ष्य का परिचय दिया है और यह निर्देश दिया है कि मुनष्य को सात्विक आहार का सेवन करते हुए सदाचार का जीवन जीना चाहिए।

सत्यार्थप्रकाश के उत्तरार्द्ध के चारों समुल्लासों में दुनिया में प्रचलित मत्, पंथ, सम्प्रदायों के सत्य और असत्य का महर्षि ने निष्पक्षता से दिग्दर्शन कराया हैं। महर्षि इस बात को बार-बार दोहराते हैं कि "मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिए है। महर्षि दयानन्द मानव का एक ही धर्म मानते हैं अनेक नहीं। इसीलिए उन्होंने दिल्ली में सभी सम्प्रदायों के लोगों को एक मत की स्थापना हेतु बुलाया था जिसमें बहुत सारे लोग सम्मिलित भी हुये थे, परन्तु वे अपने स्वार्थो से ऊपर नहीं उठ सके और वह विचार गोष्ठी सफल नहीं हो पाई। महर्षि दयानन्द ने हिन्दुओं से सम्बन्धित अनेकों मत-पंथों के सत्यासत्य का विवेचन **ग्यारहवें समुल्लास** में किया तथा जैन, बौद्ध, और वाममार्गियों का बारहवें समुल्लास में वर्णन किया। इसाइयों की वाइबिल की तेरहवें और मुसलमानों की कुरान की समीक्षा चौदहवें समुल्लास में की है। महर्षि के काल में यही चार पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी, अवैदिक मत प्रचलित थे जिनकी शाखा, उपशाखा मिलाकर लगभग एक हजार थी। आज भी

इन मतमतान्तरों की संख्या घटी नहीं, अपितु बढ़ी ही है और गुरुडमवाद का बहुत बोलबाला है।

महर्षि दयानन्द वेद को ही सत्यज्ञान स्वीकार करते हैं। उसी से मानव का कल्याण सम्भव है। यद्यपि महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका तथा वेदभाष्यों की रचना करके वेदज्ञान का प्रचार किया है, परन्तु सर्वसाधारण के कल्याण हेतु उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' नामक अमर ग्रन्थ की रचना की, जिसे वेदों की कुञ्जी भी कहा जा सकता है। प्राचीन कालीन ऋषिमुनियों के समस्त वेदविहित विचारों का सार इस ग्रन्थ में विद्यमान है। मानव-जीवन की समस्त समस्याओं का इसमें समाधान है। महाभारत के पश्चात् अज्ञान- अन्धकार, अन्धविश्वास बढ़ता चला गया और सत्य वेद ज्ञान लुप्त होता चला गया, महर्षि ने इसी विलुप्त ज्ञान को आर्य भाषा में इस ग्रन्थ में प्रकट कर दिया है। महर्षि दयानन्द के मन्तवों को समझने हेतु सत्यार्थ प्रकाश ही प्रवेश द्वार है। विभिन्न मतवादियों के असत्य और भ्रान्त विचारों का युक्ति, तर्क और प्रमाण सहित खण्डन करके जिज्ञासुओं का मार्ग सरल कर दिया। वर्तमान में दोषपूर्ण विचारों और मान्यताओं को निरन्तर प्रचार हो रहा है, उसका निराकरण केवल सत्यार्थ प्रकाश में निहित है।

सत्यार्थप्रकाश के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए पं. गुरुदत्त विद्यार्थी कहते हैं कि यदि मुझे अपनी सारी सम्पत्ति के बदले भी यह ग्रन्थ मिलता है तो सौदा सस्ता है। चौदह बार इस ग्रन्थ को पढ़कर भी वे निरन्तर इसमें नया-नया ज्ञान प्राप्त करते हैं। वीर सावरकर इस ग्रन्थ का मूल्यांकन करते हुए कहते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश के रहते कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता। जो भी व्यक्ति श्रद्धा और पूर्वाग्रहरहित होकर इस ग्रन्थ का स्वाध्याय करता है, उसकी सारी गुत्थी सुलझ जाती हैं। विश्लेषणकर्त्ताओं ने इस ग्रन्थ के महत्त्व और उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए ही इसे अमरग्रन्थ कहा है।

- पूर्व-प्राचार्य राम.म. रोहतक,
चलभाष-9416736647

त्याग मय जीवन जीना

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः। यजु. 40.10।

प्रिय पाठक बन्धुओं। उपरोक्त सूक्ति का सन्देश है उस परम पिता परमात्मा द्वारा जो कुछ प्रदान किया गया है, उसे त्याग भावना से भोगों त्याग से प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। त्याग कई प्रकार का होता है, प्राणों का त्याग, धन और वैभव का, नाम का, मोह का, पद का, सबसे बड़ा त्याग मोह का होता है। यज्ञ में मन्त्र के साथ स्वाहा शब्द का उच्चारण त्याग का प्रतीक है। शरीर के रहते हुए भी जिन्होंने मोह का त्याग कर दिया, उनको प्रतिष्ठा प्राप्त हुई, राजा जनक विदेह कहलाये गए। किसी भी रिश्ते में त्याग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि त्याग की भावना में नफरत, प्रतिस्पर्द्धा, एकाधिकार, नियंत्रण जैसी तमाम नकारात्मक बातें नष्ट हो जाती हैं। इसके बाद जो रह जाता है तो वह है केवल मात्र प्रेम। प्यार में त्याग की भावना अमृत के समान है, जो हमें कठिनाई के समय में भी नया जीवन देता है। तब हमारे पास अल्प होते हुए भी हमें परिपूर्णता का अहसास होता है। असल में जब हम सच्ची भावना से त्याग करते हैं, तब हमें कुछ हड़पने का नहीं, बलिक पाने का अहसास होता है। ऐसी स्थिति में सामने वाले के मन में हमारे लिए सम्मानजनक स्थान बनता है। त्याग की भावना जितनी प्रबल होगी, प्रेम उतना ही गहरा होता जाता है और जिस रिश्ते में प्रेम होगा वहां कलह-झगड़े की कोई गुंजाइश नहीं होती, बल्कि एक दूसरे के लिए सम्मान होगा। तब दोनों ओर भरोसे की भावना अपने चरम पर पहुँच जाती है। प्रियवर। आपके मन में यह भावना उठ सकती है कि त्याग भाव से जीवन यापन, किया जाएगा तो संसार का व्यवहार ठप्प हो जाएगा। विकास और उन्नति क्रम रूक जाएगा। फिर कोई किसी का लालन, पालन और पोषण क्यों करेगा? धर्म, कर्म और कर्त्तव्य का पालन कैसे होगा? संक्षेप में इस भावना शंका का उत्तर यह ही है कि एक कर्मचारी अपने कार्यालय में प्रातः से सायंकाल तक पूरे मनोयोग से कार्य करता है और वह कार्यालय के सभी समान को अपना कहता हुआ प्रयोग करता है। परन्तु छूटी का समय होने पर सभी सामान को वही छोड़कर चल पड़ता है कुछ साथ नहीं ले जाता। बस संसार में कार्यालय के समान त्यागमय जीवन जीना सीखें। इसी में सुख, शान्ति और आनन्द है।

- स्वामी धर्ममुनि जी

दीपावली-महर्षि दयानन्द और आर्य समाजी

-पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

आर्यवर्त्त (भारत) पर्वों एवं त्यौहारों का देश है। भारत में समय-समय पर ऋतु अनुसार सैंकड़ों पर्व मनाए जाते हैं। इतने पर्व संसार के किसी भी देश में नहीं मनाए जाते। इन पर्वों को मनाने के पीछे भारी रहस्य छिपा हुआ है। इन पर्वों में श्रावणी उपाकर्म (सलोना) अर्थात् रक्षा बंधन, विजय दशमी, दीपावली, नवशस्येष्टि यज्ञ (होली) का विशेष महत्त्व है। ये पर्व आर्य पर्व हैं और ये आदिकाल से मनाए जाते हैं, आज हम केवल वैश्य पर्व दीपावली पर ही प्रकाश डालते हैं।

दीपावली का अर्थ हैं दीपों की माला अर्थात् दीपों की कतार। यह पर्व कार्तिक मास की अमावस्या को बड़ी धूम-धाम से सकल विश्व में मनाया जाता है। इस दिन आर्यजन जगह-जगह बड़े-बड़े यज्ञ (हवन) करते हैं तथा वैदिक विद्वानों द्वारा जन कल्याण के लिए भजन प्रवचन कराए जाते हैं। कुछ नादान व्यक्ति इस दिन जुआ खेलते हैं। चोरी करते हैं और मास-मदिरा का सेवन करते हैं जो वेद विरुद्ध अनैतिक कर्म हैं। हमें ऐसे समाज विरोधी तत्वों से सावधान रहते हुए समाज को बुराइयों से बचाना चाहिए।

दीपावली पर्व मनाने के पीछे व्यक्तियों के अलग-अलग विचार हैं। कुछ लोग कहते हैं कि विजय दशमी (दशहरा) के दिन वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र ने लंका के राजा राक्षस राज रावण को युद्ध क्षेत्र में मारा। वे दीपावली के दिन वापिस सीता तथा लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे थे एवं अयोध्या वासियों ने उनके वापिस आने की खुशी में घी के दीप जलाए थे तभी से यह महापर्व मनाया जाता है। वास्तव में यह विचार सच्चाई के विरुद्ध है क्योंकि श्री राम का वनवास गमन चैत्र मास में हुआ था तथा श्री राम ने वाल्मीकी रामायण के अनुसार रावण का वध चैत्र शुक्ल अमावस्या को किया था। सन्त तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में रावण का वध दिवस चैत्र शुक्ल चौदस लिखा है। इसलिए श्री राम का दीपावली के दिन अयोध्या लौटने का विचार निराधार है। दीपावली पर्व को तो श्री रामचन्द्र जी के पूर्वज महाराजा रघु तथा महाराजा दिलीप भी मनाते थे। कुछ व्यक्ति कहते हैं कि जैन मत के प्रवर्तक महावीर स्वामी का निधन दीपावली के दिन हुआ था, उनकी याद में यह पर्व मनाया जाता है। हमारे सिख भाई कहते है कि गुरु अर्जुन देव जी इस दिन मुगलों की जेल से छूट कर आए थे तथा इस खुशी में यह त्यौहार मनाया जाता है। कुछ व्यक्ति कहते हैं कि भगवान रामतीर्थ जी का दीपावली को स्वर्गवास हुआ था। उनकी याद में यह त्यौहार मनाया जाता है।

वेदों के प्रकांड विद्वान जगत् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को वैदिक ज्ञान सिखाया था। योगी राज श्री कृष्ण चन्द्र महाराज के पश्चात् महर्षि दयानन्द जैसा त्यागी-तपस्वी, परोपकारी, ईश्वर भक्त, धर्मात्मा देशभक्त, वैदिक विद्वान संसार में दूसरा व्यक्ति कोई पैदा नहीं हुआ। महर्षि दयानन्द ने धर्म का सच्चा स्वरूप संसार के सामने रखा था। उन्होंने संसार को कर्म प्रधानता का पाठ पढ़ाकर जन्म-जाति, छुआ-छूत, ऊँच-नीच का भेद मिटाया था। नारियों और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया था। भारतवासियों को आजादी का पाठ सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द जी ने ही पढ़ाया था तथा 'गोकरुणा निधि' पुस्तक लिखकर गऊ को माता बताकर गौ सेवा करने की शिक्षा सारी दुनिया को दी थी।

महर्षि दयानन्द महाराज को वेद प्रचार का पवित्र कार्य करने में भारी कष्टों का सामना करना पड़ा था। वे भारत की दुर्दशा को देखकर रो पड़ते थे तथा रात को ठीक तरह से सोते भी नहीं थे। विरोधी दुष्ट लोगों ने उन पर गोबर, ईटें फेंकी तथा सत्तरह बार हलाहल विष पिलाया फिर भी वे मुस्कुराते रहे, अंतिम बार तो अंग्रेज़ शासकों ने तथा पाखण्डी लोगों ने नन्हीं जान वेश्या से मिलकर उनके रसोइया जगन्नाथ को लालच देकर महर्षि दयानन्द को दूध में पिसा हुआ शीशा मिलाकर पिलवा दिया फिर भी वे घबराये नहीं तथा जगन्नाथ को बुलाकर कहा बेटे! मुझे केवल एक ही दुख है कि मैंने जो वेद प्रचार एवं विश्व जागृती का पावन कार्य प्रारम्भ किया था वह अधूरा रह गया। तूने

लालच में आकर यह कार्य किया है लेकिन तुझे कुछ भी नहीं मिलेगा। मैं तुझे पाँच सौ रुपए दे रहा हूँ, तू यहाँ से दूर नेपाल देश में चला जा। तेरे प्राण बच जायेंगे। अन्यथा सवेरे पता चलने पर लोग तुझे जान से मार देंगे। ऐसे दयालु थे देव गुरु दयानन्द। संसार में ऐसा महान व्यक्ति कहीं भी नहीं मिलेगा।

आर्यो! महर्षि दयानन्द जी का हम पर भारी ऋण है जिसे हम सौ जन्मों में भी नहीं चुका सकते। सच्चाई तो यह है:-

सुनो आर्यो! भारत में यदि,
देव दयानन्द न आते!
राम, कृष्ण के प्यारे वंशज,
कहीं नहीं जग में पाते॥
वह वीर साहसी योगी था,
जीवन में कभी न घबराया।
वह जग को अमृत पिला गया था
मात यशोदा का जाया॥

आर्यो! महर्षि दयानन्द देव पुरुष युग नायक थे, तुम अपने सच्चे हित चिन्तक महान् गुरु को मत भूलो। गुरुदेव के उपकारों को याद करो और वेद प्रचार में पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती बनकर कर्म क्षेत्र में कूद पड़ो। जरा विचार करो महर्षि दयानन्द जी ने दीपावली के दिन हँसते हुए अपने प्राण धर्म रखा में त्यागे थे। स्वामी जी ने अकेले होते हुए कभी किसी से भय नहीं खाया था। वे लालच से कोसों दूर थे, गलत बातों से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया था और तुम पदों-सम्पत्तियों के लालच में आपस में लड़ रहे हो। याद रखो यह धन दौलत तुम्हारे साथ नहीं जाएगी। अगर अपना भला चाहते हो तो मेरी बात ध्यान से सुन लो:-

जो मानव संसार में, करते उल्टे काम।
मिट जाते हैं एक दिन, हो कर वे बदनाम॥
जगत्पिता जगदीश को रखो हमेशा याद।
मानव तन अनमोल है, करो न तुम बर्बाद॥
सत्य सादगी धार लो, करो भलाई मीत।
धर्मवीर बन विश्व को, लोगे निश्चित जीत॥
नारायण स्वामी बनो, करो वेदप्रचार।
'नन्दलाल' होगी सुनो, जीवन नवका पार॥

- आर्य सदन बहीन जनपद, पलवल (हरियाणा)
चलभाष-9813845774

गायत्री महिमा धूप, अगरबत्ती एवं हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

विशिष्ट	40.00	रु. प्रति किलो
उतम	50.00	रु. प्रति किलो
विशेष	60.00	रु. प्रति किलो
डोलक्स	80.00	रु. प्रति किलो
स्वोंत्तम	140.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	320.00	रु. प्रति किलो

हवन कुंड भाव इस प्रकार है
450/- हवनकुंड 9'' स्टैंड के साथ (आयरन)
560/- हवनकुंड 12'' स्टैंड के साथ (आयरन)

ओ३म ध्वज भाव इस प्रकार है
21/- ओ३म ध्वज (साइज 16X22)
42/- ओ३म ध्वज (साइज 22X34)
53/- ओ३म ध्वज (साइज 34X44)
42/- गायत्री मंत्र पटका

लाजपतराय सामग्री स्टोर

हवन सामग्री धूप एवम् अगरबत्ती, कलावा, रौली, सिंदूर, ज्योत बत्ती, जनेऊ एवं ड्राई कोन धूप, हवन कुण्ड, ओ३म ध्वज, ओ३म पटका, गुगल, लोबान, कपूर, व अर्टिफिशल फ्लावर इत्यादि

ऑफिस - 856, (ब्रांच ऑफिस : 3543), कुतुब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110006

फैक्टरी - 195/3, नंगली, सकरावती, नजफगढ़, दिल्ली -110043

E-mail : gayatrimahima70@yahoo.com

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्रीमती सरोज बाला जी, दिल्ली	11000/-
श्री एम.एम. कौशल जी सैक्टर-14, गुरुग्राम, हरियाणा	5100/-
श्रीमती विमला माता जी नजफगढ़, दिल्ली	5100/-
श्री मा. करतार सिंह जी टीकरी कला, दिल्ली	3100/-
श्रीमती पुष्पा देवी जी कुलश्रेष्ठ एच.एस.आई.एल. बहा. एक दिन का भोजन	3100/-
कुमारी सोना अंशी पोती श्री अशोक जी लाईनपार, बहादुरगढ़	3100/-
श्री स्व. जगवीर सिंह जी छिल्लर दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ एक दिन का भोजन हेतु	3100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	3000/-
स्व. उमेदसिंह डरोलिया परिवार नई बस्ती बहादुरगढ़	2200/-
आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग दिल्ली	2100/-
श्री रविन्द्र कुमार जी चड्ढा गुरुग्राम, हरियाणा	2100/-
श्री पूर्ण सिंह जी सुपुत्र श्री नौरंग सिंह जी टीकरी कलां, दि.	2100/-
श्रीमती वीरमती माता जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री महेन्द्र शर्मा जी मॉडल टाऊन बहा.	2000/-
श्री स्वामी रामानन्द सरस्वती जी आत्मशुद्धि आश्रम, बहा.	1500/-
श्री मनन जी नरवाल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
स्व. श्री दयानन्द जी धर्मविहार, बहादुरगढ़	1100/-
श्री पी.के. चौधरी जी, दिल्ली	1100/-
श्री तरसेम जी जैन बहादुरगढ़	1100/-
श्री नरेश कुमार जी राठी बहादुरगढ़	1100/-
श्री जसवीर सिंह जी, सैक्टर-9, बहादुरगढ़	1100/-
श्री स्व. मास्टर रणवीर सिंह जी नेहरु पार्क, बहादुरगढ़	1100/-
श्री यश जी मेहरा लाईनपार, बहादुरगढ़	1100/-
श्री नरेश दराल टीकरी कलां, दिल्ली	1100/-
श्री दिलेर जी गांव मदान खुर्द झज्जर	1000/-
श्री रामानन्द जी सिवान, बिहार छात्रवृत्ति	1000/-
श्री सिद्धार्थ जी चड़ढा गुरुग्राम, हरियाणा	1000/-
श्री संजू जी परनाला बहादुरगढ़	1000/-
श्री प्रवीण कुमार जी रोहिणी, दिल्ली	850/-
श्री भीम सेन जी मदान वैदिक वृद्धाश्रम	700/-
श्री संजय जी जोशी एच.एन.जी कॉलोनी, बहा.	501/-
श्री मन्दीप जी छिकारा धर्मविहार, बहादुरगढ़	500/-
श्री जयदादा भईया गांव जाखौदा, बहादुरगढ़	500/-
श्री विनीत जी मित्तल नेहरु पार्क, बहादुरगढ़	500/-
श्री रमणीक जी दयानन्द नगर बहादुरगढ़	500/-
श्री प्रदीप तंवर जी सांखोल बहादुरगढ़	500/-
श्री विरेन्द्र जी दलाल बहादुरगढ़	500/-

गौशाला हेतु दान

श्री मनन जी नरवाल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
स्व. श्री विजय कुमार जी नई बस्ती, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

1. श्री हरीश जी माता जी की स्मृति में 25 कि. चावल एवं 4 कि. दाल
2. श्रीमती दिपाली जी सभी बच्चों के लिए बर्गर, चिप्स, केक, फ्रूटी दिये।
3. श्रीमती मधु जी 10 किलो दाल एवं 20 किलो चावल
4. श्री हर्ष जी अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में केले एवं बिस्किट्स
5. श्री नवीन जी अपने स्व. पिता जी की पुण्य तिथि पर 10 किलो आटा, केले, तेल, चावल आदि।
6. वैल्कम शूज के तरफ से चार पेटी बिस्ट्स एवं रस
7. श्रीमती पूनम शर्मा एवं उनकी पूरी टीम के तरफ से सभी बच्चों के लिए कई प्रकार के खेलों के समान, पढ़ाई लिखाई का सामान, सर्फ, साबुन एवं भोजन का सामान दाले, आटा, चीनी, तेल आदि प्रदान किए
8. श्री अजय जी दीपावली पर बच्चों के लिए नमकीन एवं फ्रूटी।
9. श्री अश्वनी जी अपनी स्व. माता सन्तोष जी की स्मृति में आटा, चावल, दाल, चीनी।
10. श्री निशान्त जी सिंघल जी दीपावली के शुभ अवसर पर बच्चों के लिए केले, मिठाई एवं पटाखे प्रदान किए।
11. स्व. श्री तीर्थ दास जी की स्मृति में बिस्किट की पेटी।
12. श्री चिराग जी गुप्ता, श्री तरंग जी, श्री तरूण जी के माध्यम से दीपावली के शुभ अवसर पर 20 किलो दूध एवं ब्रैड प्रदान किए।
13. स्व. श्री अमृत लाल जी की पुण्य तिथि के अवसर पर केले एवं बिस्ट्स
14. समस्त वत्स परिवार के तरफ से दो पेटी बिस्ट्स एक पेटी सेव, एक पेटी समोसे, मिठाई एवं मट्ठी प्रदान किए।
15. श्री दलेल सिंह जी अपने स्वर्गीय पिता श्री शुभराम जी की पुण्य तिथि पर केले एवं मिठाई।
16. श्री राजू जैन जी आश्रम में एक पीपी सरसों का तेल, चीनी, बिस्किट्स, नमकीन प्रदान किए।
17. श्रीमती पूजा मिश्रा जी केले, फ्रूटी, पेठा, टॉफी आदि दिए।
18. श्रीमान चंकी नागपाल जी 20 किलो दाल, फ्रूटी, चॉकलेट प्रदान किए।
19. श्री दीपेन्द्र डबास शनि मन्दिर टीकरी कलां दि. 1 टीन सरसों का तेल।

एक समय का विशेष भोजन

1. श्री संचित जी सैक्टर-9 के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में
2. श्रीमती वरूणी गुप्ता सुपुत्री श्री राकेश गुप्ता, सी-4, बहादुरगढ़
3. श्री अमित जी कौशिक सुपुत्र श्री जय प्रकाश जी कौशिक
4. श्री मास्टर सुरेन्द्र जी मुण्डाहेड़ा कबीर आश्रम परिवार
5. श्रीमती सुमित्रा देवी जी अपने पतिदेव स्व. श्री लक्ष्मी नारायण जी की याद में एक समय का विशेष भोजन
6. केदारनाथ झा जी अपने पुत्र कौस्तुभ झा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक समय का विशेष भोजन
7. श्री राज जी ने समस्त आश्रम परिवार को एक समय का विशेष।
8. श्री संजय जी गोयल अपने भांजे की स्मृति में।
9. श्री विनोद जी प्रमोद जी नजफगढ़ दिल्ली।

मुद्रक व प्रकाशक : आचार्य विक्रमदेव, सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 नवम्बर 2024 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

निमंत्रण...

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ, योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम के भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता

आत्म स्वामी जी महाराज

पूज्यपाद स्व. स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी' के

89 वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

बृहद् यज्ञ एवं भजन संध्या सुर और संगीत का भव्य आयोजन

बुधवार 20 नवम्बर 2024

सानिध्य: आचार्य विक्रमदेव जी नैष्ठिक मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम

यज्ञ ब्रह्मा: आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता आचार्य सत्यवीर शास्त्री जी योगनिष्ठ, रोहिणी दिल्ली

कार्यक्रम मध्याह्नोपरान्त 2:30 बजे से 7:00 बजे तक तद्पश्चात् ऋषिभोज

वक्ता एवं गायक कलाकार : श्री स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, संगीताचार्य श्री भगवान दास जी महाराज (वेदान्त आश्रम, बहादुरगढ़), डॉ. रवि आर्य जी, पं. जयभगवान जी आर्य (झज्जर) एवं आश्रम के ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम प्रभावशाली रहेगा।

आश्रम पुराने बस स्टॉप के समीप मैट्रो पिलर न. 819, दिल्ली रोड़ पर स्थित है।

संयोजक: श्री राजवीर आर्य, मो. 9811778655

निवेदक:

श्री सत्यानन्द आर्य (संरक्षक)

श्री कन्हैया लाल आर्य (प्रधान) मो. 9911197073

श्री सत्यपाल वत्सार्य (उपप्रधान) मो. 9416055359

श्री अशोक जून आर्य (कोषाध्यक्ष) मो. 9996542766

अमृत आर्य (सहयोगी) मो. 9990108323

आत्मशुद्धि आश्रम, (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़ जिला-झज्जर, (हरियाणा), चलभाष: 9416054195, 9896578062, 7988671343

आत्म-शुद्धि-पथ मासिक

नवम्बर 2024

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में

आर्य सन्देश साप्ताहिक
आर्य प्रतिनिधि
मान रोड़ नई दिल्ली
110001

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। अपने प्रियों के नाम पर कमरा बनवाने के इच्छुक सम्पर्क कर सकते है। आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। धन्यवाद!

–व्यवस्थापक आश्रम सम्पर्क सूत्रः 7988671343